

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU 180839

UNIVERSAL
LIBRARY

खादी के फूल

सन् १९४८ में

लिखित

ग्रंथ-संख्या—१३१

प्रकाशक तथा विक्रेता

भारती-भंडार

लीडर प्रेस, प्रयाग

प्रथम संस्करण

संवत् २००५

मूल्य ५)

मुद्रक

महादेव एन० जोशी

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

खादी के फूल

श्री सुमित्रानंदन पंत

वचन

भारती भंडार, प्रयाग

सर्वोदय साहित्य मन्दिर

हुसैनी अलम रोड़, हैदराबाद (दक्षिण).

प्राक्कथन

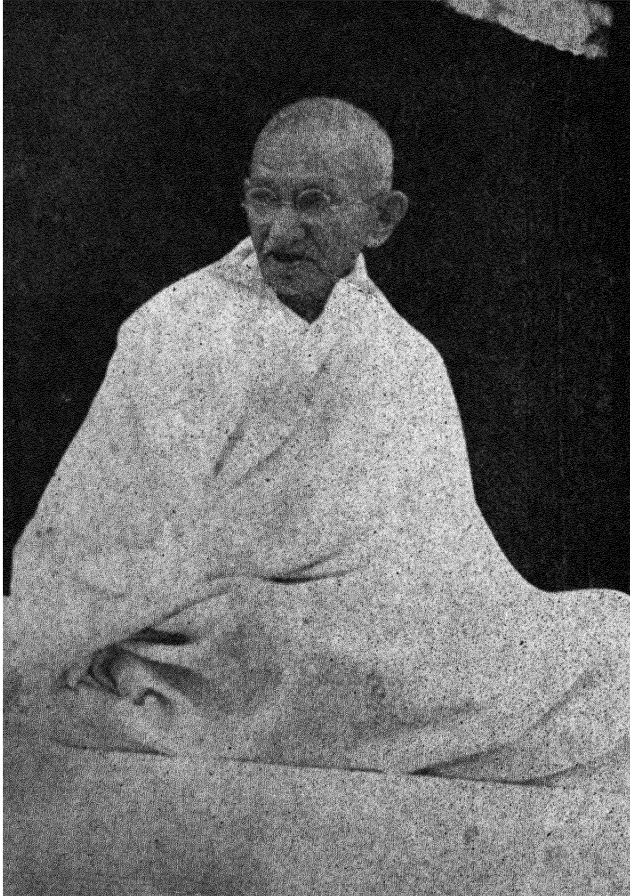
इस बार प्रयाग में बच्चन के साथ अपने दस मास के सहवास की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से ही 'खादी के फूल' के नाम से, महात्मा जी को श्रद्धांजलि स्वरूप, अपनी और बच्चन की कविताओं का यह संयुक्त संग्रह प्रकाशित कराने को मैं प्रेरित हुआ हूँ ।

महात्मा जी के अश्रांत उद्योग से जहाँ हमें स्वाधीनता प्राप्त हुई है वहाँ उनके महान व्यक्तित्व से हमें गंभीर सांस्कृतिक प्रेरणा भी मिली है। महात्मा जी ने राजनीति के कर्दम में अहिंसा के वृंत पर जिस सत्य को जन्म दिया है वह संस्कृति की देवी का ही आसन है। अतः बापू के उज्वल जीवन की पुण्यस्मृति से सुरभित इन खादी के फूलों को हम पाठकों को इस विनीत आशा से समर्पित कर रहे हैं कि हम खादी के स्वच्छ परिधान के भीतर गांधीवाद के संस्कृत हृदय को स्पंदित कर सकेंगे ।

प्रयाग
मई, १९४८

श्री सुमित्रानंदन पंत

खादी के फूल—



(श्री मुनीश वैश्य के सौजन्य से प्राप्त)

राष्ट्र-पिता
के
चरणों में अर्पित

खादी के फूल

गीतों की प्रथम पंक्ति सूची

श्री सुमित्रानंदन पंत के	गीत	१ से	१५
बच्चन के	गीत	१६ से	१०८

	प्रथम पंक्ति		पृष्ठ
१	अंतर्धान हुआ फिर देव विचर धरती पर		१
२	हाय, हिमालय ही पल में हो गया तिरोहित	२
३	आज प्रार्थना से करते तृण तरु भर मर्मर,	३
४	हाय, आँसुओं के आँचल से ढँक नत आनन	...	४
५	हिम किरीटिनी, मौन आज तुम शीश मुक्काए,	...	५
६	देख रहे क्या देव, खड़े स्वर्गोच्च शिखर पर	६
७	देख रहा हूँ, शुभ्र चाँदनी का सा निर्भर	७
८	देव पुत्र था निश्चय वह जन मोहन मोहन,	८
९	देव, अवतरण करो धरा-मन में क्षण, अनुक्षण,	...	९
१०	दर्प दीप्त मनु पुत्र, देव, कहता तुमको युग मानव,	...	१०
११	प्रथम अहिंसक मानव बन तुम आए हिंस्र धरा पर,	...	११
१२	सूर्य किरण सतरंगों की श्री करतीं वर्षण	१२
१३	राजकीय गौरव से जाता आज तुम्हारा अस्थि फूल रथ,	...	१३
१४	लो, भरता रक्त प्रकाश आज नीले बादल के आँचल से,	...	१४
१५	बारबार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन	१५

	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ
१६—	हो गया क्या देश के सब से सुनहले दीप का निर्वाण !	... १७
१७	ओ राष्ट्र महाकवि, राष्ट्रनाद, मैथिलीशरण, २८
१८	तुम किए पड़े हो कहाँ, 'शायरे इन्कलाब', ३१
१९	इस शामेवतन में इतना गहरा अंधकार, ३४
२०	ओ सरोजिनी वह तेरी ओजभरी वाणी, ३६
२१	यदि होते बीच हमारे श्री गुरुदेव आज, ४२
२२	'इकबाल' कब्र के अंदर सोते मौन आज, ४३
२३	भारत पर आकर टूटी है क्या आधि-व्याधि, ४४
२४	रघुपति, राघव, राजा राम, ४५
२५	हो गया गर्व भारत माता का आज चूर, ४६
२६	इस महा विपद में व्याकुल हो मत शीश धुनो,	... ४८
२७	कल्मष-कलुष-धँसी धरती पर ४९
२८	भारतमाता का सब से प्यारा बड़ा पूत ५०
२९	जब वर्षों हमने खून-पसीना एक किया, ५१
३०	यह गांधी मर कर पड़ा नहीं है धरती पर, ५२
३१	वे तो भारतमाता की पावन वेदी पर, ५३
३२	जो गोली खाकर गिरी, मरी, वह थी छाया, ५४
३३	जिसने युग-युग से दबे हुआओं को दी आशा, ५५
३४	जिन आँसों में करुणा का सिंधु छलकता था, ५६
३५	जिसने रियासत के तरे आगे ताना था, ५७
३६	अंतिम क्षण में जो भाव हृदय में स्थित होता, ५८
३७	नाथू किसको पिस्तौल मारने को लाया, ५९
३८	जब से था हमने होश सँभाला उनका स्वर, ६१

	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ
३६	था जिसे नहीं परदेशी शासन का कुछ डर, ६२
४०	हत्यारे गोरों की यौवन में सही मार, ६४
४१	घर तुमको जनता के हित कारागार हुआ, ६६
४२	जी महिमावानों की महानता दिखलाई, ६७
४३	यह जग अपना मग भूला हुआ मुसाफिर है, ६८
४४	भारत के आँगन में जो आग सुलगती थी, ६९
४५	तुमने गुलाम हिंदोस्तान में जन्म लिया, ७१
४६	हम घृणा-क्रोध-कटुता जितनी फैलाते थे, ७२
४७	लड़नेवालों में तुम-सा कौन लड़ाका था, ७३
४८	वे अग्नि पताका ले दुनिया में आए थे, ७४
४९	बापू, कितने ही तेरे एक इशारे पर ७५
५०	जब कानपूर के हिंदू-मुस्लिम दंगे में ७६
५१	वे तप का तेज लिए थे अपने आनन पर, ७८
५२	सुकरात संत ने पिया जहर का प्याला था, ७९
५३	जब देव-असुर दोनों ने मिलकर सिंधु मथा, ८०
५४	वह सत्य अहिंसा का सागर था चिर निर्मल, ८१
५५	बापू के तन से बेज़बान लोहू बहकर, ८३
५६	भारत के हाथों पाप हुआ ऐसा भारी, ८५
५७	हम सब अपने पापी हाथों को मलते हैं, ८६
५८	भाग्य था वे थे हमारे पथ-प्रदर्शक, ८७
५९	पृथ्वी पर जितने देश, जाति, औ' महापुरुष, ८८
६०	बापू के अवसान पर जब मन दुखित-उदास, ८९
६१	जब तुम सजीव धरती पर चलते फिरते थे, ९१

	प्रथम पंक्ति		पृष्ठ
६२	खोकर अपने हाथों से दौलत गांधी-सी ६३
६३	वे आत्मा जीवी थे काया से कहीं परे, ६४
६४	अज्ञान, अशिक्षित और अदीक्षित भारत में ६५
६५	है गांधी हिंदू जनता का दुश्मन भारी, ६७
६६	उसने खुद तृण-कुश-कंटक जाल चबाया, ६८
६७	हिंदू जनता को रहा सदा वह धर्म-प्राण, १००
६८	जल लाखों, कर्मों से पशु को शरमाते थे, १०२
६९	उसके बेटे दोनों थे हिंदू-मुसल्मान, १०३
७०	ईश्वर-अल्ला एकहि नाम, १०४
७१	ईश्वर-अल्ला एकहि नाम, १०५
७२	एक हज़ार बरस की जिसने १०७
७३	नरसी मेहता का गीत रेडियो गाता है, ११०
७४	गांधी को हत्यारे ने हमसे छीन लिया, ११२
७५	हिंसा जो उसको चाल रुचे चल सकती है, ११३
७६	अपने ईश्वर पर उसको बड़ा भरोसा था, ११४
७७	जिस दुनिया में भौतिकता पूजी जाती थी, ११६
७८	थी राजनीति क्या, छल-बल सिद्ध आखाड़ा था, ११८
७९	वे कहते थे, दुश्मन को बस वह जीत सका, ११९
८०	बापू के मरने पर यह शब्द जिना के थे, १२०
८१	यह सच है, नाथू ने बापू जी को मारा, १२१
८२	उसने अपना सिद्धांत न बदला मात्र लेश, १२२
८३	तुम गए, भाग्य ही हमने समझा अस्त हुआ, १२३
८४	बापू-बापू कहना तुमको है बहुत सरल , १२४

	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ
८५	बापू, था ऐसा वातावरण विषाक्त बना, १२५
८६	बापू, तुमसे जो सत्य प्रवाहित होते थे, १२७
८७	जब गांधी जी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को, १२८
८८	भूले से भी तुमने यह दावा नहीं किया, १२९
८९	जब कि भारत भूमि थी भीषण तिमिर में आवृता,	... १३०
९०	जब स्वर्ग लोक में पहुँचे बापू तन तजकर १३१
९१	था उचित कि गांधी जी की निर्मम हत्या पर १३३
९२	दस लाख जनों के जिसके शव पर फूल चढ़े,	... १३५
९३	ऐसा भी कोई जीवन का मैदान कहीं १३६
९४	तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर, १३७
९५	गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे जाएगा, १३८
९६	बलिदानी तो अपने प्राणों से जाता है, १४०
९७	ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से, १४१
९८	भारत माता की युग-युग उर्वर धरती पर १४२
९९	उनके प्रभाव से हृदय-हृदय था अनुरंजित, १४३
१००	आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण नुमाइश में १४५
१०१	बापू के बलिदानी शव पर १४७
१०२	हम गांधी की प्रतिभा के इतने पास खड़े १४९
१०३	बापू की पावन छाती से जो खून बहा, १५२
१०४	उस परम हंस के घायल होकर गिरते ही १५३
१०५	तुम महा साधना, जग-कुवासना में विलीन, १५५
१०६	यह समय नहीं है गाने, गान सुनाने का, १५६
१०७	वन गमन समय मुनियों का वेश बनाए, १५७
१०८	कुछ नहीं हमारे शब्द, छंद में, रागों में, १५९

खादी के फूल

१

अंतर्धान हुआ फिर देव विचर धरती पर ,
स्वर्ग हृदय से मर्त्यलोक की रज को रँगकर !
टूट गया तारा, अंतिम आभा का दे वर ,
जीर्ण जाति मन के खँडहर का अंधकार हर !

अंतर्मुख हो गई चेतना दिव्य अनामय
मानस लहरों पर शतदल सी हँस ज्योतिर्मय !
मनुजों में मिल गया आज मनुजों का मानव
चिर पुराण को बना आत्मबल से चिर अभिनव !

आओ, हम उसको श्रद्धांजलि दें देवोचित ,
जीवन सुंदरता का घट मृत को कर अर्पित
मंगलप्रद हो देवमृत्यु यह हृदय विदारक
नव भारत हो बापू का चिर जीवित स्मारक !

बापू की चेतना बने पिक का नव कूजन ,
बापू की चेतना वसंत बखेरे नूतन !

२

हाय, हिमालय ही पल में हो गया तिरोहित
ज्योतिर्मय जल से जन धरणी को कर प्लावित !
हाँ, हिमाद्रि ही तो उठ गया धरा से निश्चित
रजत वाष्प सा अंतर्नभ में हो अंतर्हित !

आत्मा का वह शिखर, चेतना में लय क्षण में ,
व्याप्त हो गया सूक्ष्म चाँदनी सा जन मन में !
मानवता का मेरु, रजत किरणों से मंडित ,
अभी अभी चलता था जो जग को कर विस्मित ,
लुप्त हो गया : लोक चेतना के क्षत पट पर
अपनी स्वर्गिक स्मृति की शाश्वत छाप छोड़कर !

आओ, उसकी अक्षय स्मृति को नींव बनाएँ ,
उसपर संस्कृति का लोकोत्तर भवन उठाएँ !
स्वर्ण शुभ्र धर सत्य कलश स्वर्गोच्च शिखर पर
विश्व प्रेम में खोल अहिंसा के गवाक्ष वर !

३

आज प्रार्थना से करते तृण तरु भर मर्मर ,
सिमटा रहा चपल कूलों को निस्तल सागर !
नम्र नीलिमा में नीरव, नभ करता चिंतन
श्वास रोक कर ध्यान मग्न साःहुआ समीरण !

क्या क्षण भंगुर, तन के हो जाने से ओभल
सूनेपन में समा गया यह सारा भूतल ?
नाम रूप की सीमाओं से मोह मुक्त मन
या अरूप की ओर बढ़ाता स्वप्न के चरण ?

ज्ञात नहीं : पर द्रवीभूत हो दुख का बादल
बरस रहा अब नव्य चेतना में हिम उज्वल ,
बापू के आशीर्वाद सा ही : अंतस्तल
सहसा है भर गया सौम्य आभा से शीतल !

खादी के उज्वल जीवन सौंदर्य पर सरल
भावी के सतरंग सपने कँप उठते भलमल !



हाय, आँसुओं के आँचल से ढँक नत आनन
तू विषाद की शिला बन गई आज अचेतन ,
ओ गांधी की धरे, नहीं क्या तू अकाय-व्रण ?
कौन शस्त्र से भेद सका तेरा अछेद्य तन ?

तू अमरों की जनी, मर्त्य भू में भी आकर
रही स्वर्ग से परिणीता, तप पूत निरंतर !
मंगल कलशों से तेरे वक्षोजों में घन
लहराता नित रहा चेतना का चिर यौवन !
कीर्ति स्तंभ से उठ तेरे कर अंबर पट पर
अंकित करते रहे अमिट ज्योतिर्मय अक्षर !

उठ, ओ गीता के अक्षय यौवन की प्रतिमा ,
समा सकी कब धरा स्वर्ग में तेरी महिमा !
देख, और भी उच्च हुआ अब भाल हिम शिखर
बाँध रहा तेरे अंचल से भू को सागर !

५

हिम किरीटिनी, मौन आज तुम शीश भुकाए ,
 सौ वसंत हों कोमल अंगों पर कुम्हलाए !
 वह जो गौरव शृंग धरा का था स्वर्गोज्वल ,
 टूट गया वह ? —हुआ अमरता में निज ओझल !
 लो, जीवन सौंदर्य ज्वार पर आता गांधी ,
 उसने फिर जन सागर में आभा पुल बाँधी !

खोलो, मा, फिर बादल सी निज कवरी श्यामल ,
 जन मन के शिखरों पर चमकें विद्युत के पल !
 हृदय हार सुरधुनी तुम्हारी जीवन चंचल ,
 स्वर्ण श्रोणि पर शीश धरे सोया विध्याचल !
 गज रदनों से शुभ्र तुम्हारे जघनों में घन
 प्राणों का उन्मादन जीवन करता नर्तन !

तुम अनंत यौवना धरा हो, स्वर्गाकांक्षित ,
 जन को जीवन शोभा दो : भू हो मनुजोचित !

६

देख रहे क्या देव, खड़े स्वर्गोच्च शिखर पर
लहराता नव भारत का जन जीवन सागर ?
द्रवित हो रहा जाति मनस का अंधकार घन
नव मनुष्यता के प्रभात में स्वर्णिम चेतन !

मध्ययुगों का घृणित दाय हो रहा पराजित ,
जाति द्वेष, विश्वास अंध, औदास्य अपरिमित !
सामाजिकता के प्रति जन हो रहे जागरित
अति वैयक्तिकता में खोए, मुंड विभाजित !

देव, तुम्हारी पुण्य स्मृति बन ज्योति जागरण
नव्य राष्ट्र का आज कर रही लौह संगठन !
नव जीवन का रुधिर हृदय में भरता स्पंदन,
नव्य चेतना के स्वप्नों से विस्मित लोचन !

भारत की नारी ऊषा सी आज अगुंठित,
भारत की मानवता नव आभा से मंडित !

७

देख रहा हूँ, शुभ्र चाँदनी का सा निर्भर
गांधी युग अवतरित हो रहा इस धरती पर !
विगत युगों के तोरण, गुंबद, मीनारों पर
नव प्रकाश की शोभा रेखा का जादू भर !

संजीवन पा जाग उठा फिर राष्ट्र का मरण,
छायाएँ सी आज चल रहीं भू पर चेतन,—
जन मन में जग, दीप शिखा के पग धर नूतन
भावी के नव स्वप्न धरा पर करते विचरण !

सत्य अहिंसा बन अंतर्राष्ट्रीय जागरण
मानवीय स्पर्शों से भरते हैं भू के व्रण !
भुका तड़ित-अणु के अश्वों को, कर आरोहण,
नव मानवता करती गांधी का जय घोषण !

मानव के अंतरतम शुभ्र तुषार के शिखर
नव्य चेतना मंडित, स्वर्णिम उठे हैं निखर !

८

देव पुत्र था निश्चय वह जन मोहन मोहन,
सत्य चरण धर जो पवित्र कर गया धरा कण !
विचरण करते थे उसके संग विविध युग वरद
राम, कृष्ण, चैतन्य, मसीहा, बुद्ध, मुहम्मद !

उसका जीवन मुक्त रहस्य कला का प्रांगण,
उसका निश्छल हास्य स्वर्ग का था वातायन !
उसके उच्चादर्शों से दीपित अब जन मन,
उसका जीवन स्वप्न राष्ट्र का बना जागरण !

विश्व सभ्यता की कृत्रिमता से हो पीड़ित
वह जीवन सारल्य कर गया जन में जागृत !
यांत्रिकता के विषम भार से जर्जर भू पर
मानव का सौंदर्य प्रतिष्ठित कर देवोत्तर !

आत्म दान से लोक सत्य को दे नव जीवन
नव संस्कृति की शिला रख गया भूपर चेतन

६

दव, अवतरण करो घरा-मन में क्षण, अनुक्षण,
 नव भारत के नव जीवन बन, नव मानवपन !
 जाति ऐक्य के ध्रुव प्रतीक, जग वंद्य महात्मन् ,
 हिंदू मुस्लिम बड़ें तुम्हारे युगल चरण बन !

भावी कहती कानों में भर गोपन मर्मर, —
 हिंदू मुस्लिम नहीं रहेंगे भारत के नर !
 मानव होंगे वे, नव मानवता से मंडित,
 मध्य युगों की कारा से भू परे चल विस्तृत !

जाति द्वेष से मुक्त, मनुजता के प्रति जीवित,
 विकसित होंगे वे, उच्चादर्शों से प्रेरित !
 भू जीवन निर्माण करेंगे, शिक्षित जन मत,
 बापू में हो युक्त, युक्त हो जग से युगपत् !

नव युग के चेतना ज्वार में कर अवगाहन
 — — — — — इन-सौंदर्य करेंगे धारण !

१०

दर्प दीप्त मनु पुत्र, देव, कहता तुमको युग मानव,
नहीं जानता वह, यह मानव मन का आत्म पराभव !
नहीं जानता, मन का युग मानव आत्मा का शैशव,
नहीं जानता मनु का सुत निज अंतर्नभ का वैभव !

जिन स्वर्गिक शिखरों पर करते रह देव नित विचरण,
जिस शाश्वत मुख के प्रकाश से भरते रहे दिशा क्षण,
आज अपरिचित उससे जन, ओढ़े प्राणों का जीवन,
मन की लघु डगरों में भटके, तन को किए समर्पण !

वे मिट्टी-से आज दबाए मुँह में ममता के तृण
नहीं जानते वे, रज की काया पर देवों का ऋण !
ज्योति चिह्न जो छोड़ गए जन मन में बुद्ध महात्मन्
वे मानव की भावी के उज्वल पथ दर्शक नूतन !

मतोद्यत्र कर रहा चेतना का मध्व जीवन ग्रंथित,
लोकोत्तर के संग देवोत्तर मनुज हो रहा विकसित !

११

प्रथम अहिंसक मानव बन तुम आए हिंस्र धरा पर,
 मनुज बुद्धि को मनुज हृदय के स्पर्शों से संस्कृत कर !
 निबल प्रेम को भाव गगन से निर्धम धरती पर धर
 जन जीवन के बाहु पाश में बाँध गए तुम दृढ़तर !
 द्वेष घृणा के कटु प्रहार सह, करुणा दे प्रेमोत्तर
 मनुज अहं के गत विधान को बदल गए, हिंसा हर !

घृणा द्वेष मानव उर के संस्कार नहीं हैं मौलिक,
 वे स्थितियों की सीमाएँ हैं : जन होंगे भौगोलिक !
 आत्मा का संचरण प्रेम होगा जन मन के अभिमुख,
 हृदय ज्योति से मंडित होगा हिंसा स्पर्धा का मुख !

लोक अभीप्सा के प्रतीक, नव स्वर्ग मर्त्य के परिणय,
 अग्रदूत बन भव्य युग पुरुष के आए तुम निश्चय !
 ईश्वर को दे रहा जन्म युग मानव का संघर्षण,
 मनुज प्रेम के ईश्वर, तुम यह सत्य कर गए घोषण !

१२

सूर्य किरण सतरंगों की श्री करतीं वर्षण
सौ रंगों का सम्मोहन कर गए तुम सृजन,—
रत्नच्छाया सा, रहस्य शोभा से गुंफित,
स्वर्गोन्मुख सौंदर्य प्रेम आनंद से स्वसित !

स्वप्नों का चंद्रातप तुम बुन गए, कलाधर,
विहँस कल्पना नभ से, भाव-जलद-पर रँगकर,
रहस प्रेरणा की तारक ज्वाला से स्पंदित
विश्व चेतना सागर को कर रंग ज्वार स्मित !

प्राण शक्ति के तड़ित मेघ से मंद्र भर स्तनित
जन भू को कर गए अग्नि बीजों से गर्भित,
तुम अखंड रस पावस का जीवन प्लावन भर
जगती को कर अजर हृदय मीवन से उर्वर !

आज स्वप्न पथ से आते तुम मौन धर चरण,
बापू के गुरुदेव, देखने राष्ट्र जागरण !

१३

राजकीय गौरव से जाता आज तुम्हारा अस्थि फूल रथ,
 श्रद्धा मौन असंख्य दृगों से अंतिम दर्शन करता जन पथ !
 हृदय स्तब्ध रह जाता क्षण भर, सागर को पी गया ताम्र घट ?
 घट घट में तुम समा गए, कहता विवेक फिर, हटा तिमिर पट !
 बाँध रही गीले आँचल में गंगा पावन फूल ससंभ्रम,
 भूत भूत में मिलें, प्रकृति क्रम : रहे तुम्हारे सँग न देह भ्रम !

अमर तुम्हारी आत्मा, चलती कोटि चरण धर जन में नूतन,
 कोटि नयन नवयुग तोरण बन, मन ही मन करते अभिनंदन !
 भूल क्षणिक भस्मांत स्वप्न यह, कोटि कोटि उर करते अनुभव
 बापू नित्य रहेंगे जीवित भारत के जीवन में अभिनव !

आत्मज होते महापुरुष : वे अगणित तन कर लेते धारण,
 मृत्यु द्वार कर पार, पुनर्जीवित हो, भू पर करते विचरण !
 राजोचित सम्मान तुम्हें देता, युग सारथि, जन मन का रथ,
 नव आत्मा बन उसे चलाओ, ज्योतित हो भावी जीवन पथ !

लो, भरता रक्त प्रकाश आज नीले बादल के अंचल से,
 रँग रँग के उड़ते सूक्ष्म वाष्प मानस के रश्मि ज्वलित जल से !
 प्राणों के सिंधु हरित पट से लिपटी हैंस सोने की ज्वाला,
 स्वप्नों की सुषमा में सहसा निखरा अवचेतन अँधियाला !

आभा रेखाओं के उठते गृह, धाम, अट्ट, नवयुग तोरण,
 रूपहले परों की अप्सरियाँ करतीं स्मित भाव सुमन वर्षण !
 दिव्यात्मा पहुँची स्वर्गलोक, कर काल अश्व पर आरोहण,
 अंतर्मन का चैतन्य जगत करता बापू का अभिनंदन !

नव संस्कृति की चेतना शिला का न्यास हुआ अब भू-मन में,
 नव लोक सत्य का विश्व संवरण हुआ प्रतिष्ठित जीवन में !
 गत जाति धर्म के भेद हुए भावी मानवता में चिर लय,
 विद्वेष घृणा का सामूहिक नव हुआ अहिंसा से परिचय !

तुम धन्य युगों के हिंसक पशु को बना गए मानव विकसित,
 तुम शुभ्र पुरुष बन आए, करने स्वर्ण पुरुष का पथ विस्तृत !

१५

बारबार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, तुम कब थे भंगुर तन ?
व्याप्त हो गए जन मन में तुम आज महात्मन्
नव प्रकाश बन, आलोकित कर नव जग-जीवन !
पार कर चुके थे निश्चय तुम जन्म औ' निधन
इसीलिए बन सके आज तुम दिव्य जागरण !
श्रद्धानत अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, नव जीवन के जीवन !

१६

हो गया क्या देश के

सबसे सुनहले दीप का

निर्वाण !

(१)

वह जगा क्या जन्मगाया देश का
तम से धिया प्रासाद,
वह जगा क्या था जहाँ अवसाद छाया,
छा गया आह्लाद,

वह जगा क्या बिछ गई आशा किरण
की चेतना सब ओर,

वह जगा क्या स्वप्न से सूने हृदय-
मन हो गए आवाद

वह जगा क्या ऊर्ध्व उन्नति-पथ हुआ
आलोक का आधार,

वह जगा क्या मानवों का स्वर्ग ने
उठकर किया आह्वान,

हो गया क्या देश के
राजसे मुनहूँ दीप का
निर्वाण !

(२)

वह जला क्या जग उठी इस जाति की

सोई हुई तकदीर,

वह जला क्या दासता की गल गई

बंधन बनी जंजीर,

वह जला क्या जग उठी आजाद होने

की लगन मजबूत,

वह जला क्या हो गई बेकार कारा-

गार की प्राचीर,

वह जला क्या विश्व ने देखा हमें

आश्चर्य से दृग खोल,

वह जला क्या मर्दियों ने क्रांति की

देखी ध्वजा अस्तान ,

हो गया क्या देश के

सबरो दमकते दीप का

निर्वाण !

(३)

वह हँसा तो मृत मरुस्थल में चला

मधुमास-जीवन-श्वास,

वह हसा तो कौम के रौशन भविष्यत

का हुआ विश्वास

वह हँसा तो जड़ उमंगों ने किया

फिर से नया शृंगार,

वह हँसा तो हँस पड़ा इस देश का

रूठा हुआ इतिहास,

वह हँसा तो रह गया संदेह-शंका

को न कोई ठौर,

वह हँसा तो हिचकिचाहट-भीति-भ्रम का

हो गया अदसान,

हो गया क्या देत के

सबसे चमकते दीप का

निर्माण !

(४)

वह उठा तो एक लौ में बंद होकर

आ गई ज्यों भोर,

वह उठा तो उठ गई सब देश भर की

आँख उसकी ओर,

वह उठा तो उठ पड़ीं सदियाँ विगत

अँगड़ाइयाँ ले साथ,

वह उठा तो उठ पड़े युग-युग दबे

दुखिया, दलित, कमजोर,

वह उठा तो उठ पड़ीं उत्साह की

लहरें दृगों के बीच,

वह उठा तो भुक गए अन्याय,

अत्याचार के अभिमान,

हो गया क्या देश के

सबसे प्रभामय दीप का

निर्वाण !

(५)

वह न चाँदी का, न सोने का न कोई
धातु का अनमोल,
थी चढ़ी उसपर न हीरे और मोती
की सजीली खोल,

मृत्तिका की एक मुट्ठी थी कि उपमा
सादगी थी आप,

किन्तु उसका मान सारा स्वर्ग सकता
था कभी क्या तोल ?

ताज शाहों के अगर उसने भुकाए
तो तजज्जुब कौन,

कर सका वह निम्नतम, कुचले हुआ का
उच्चतम उत्थान,

हो गया क्या देश के
सबसे मनस्वी दीप का
निर्वाण !

(६)

वह चमकता था, मगर था कब लिए

तलवार पानीदार,

वह दमकता था मगर अज्ञात थे

उसको सदा हथियार,

एक अंजलि स्नेह की थी तरलता में

स्नेह के अनुरूप,

किंतु उसकी धार में था डूब सकता

दश क्या, संसार;

स्नेह में डूबे हुए ही तो हिफ़ाज़त

से पहुँचते पार,

स्नेह में जलते हुए ही कर सके हैं

ज्योति-जीवनदान,

हो गया क्या देश के

सबसे तपस्वी दीप का

निर्वाण !

(७)

स्नेह में डूबा हुआ था हाथ से

काती रुई का सूत,

थी बिखरती देश भर के घर-डगर में

एक आभा पूत,

रोशनी सब के लिए थी, एक को भी

थी नहीं अंगार,

फ़र्क अपने औं पराए में न समझा

शांति का यह दूत,

चाँद-सूरज से प्रकाशित एक से हैं

भोपड़ी-प्रासाद,

एक-सी सब को विभा देते जलाते

जो कि अपने प्राण,

हो गया क्या देश के

सबसे यशस्वी दीप का

निर्वाण !

(८)

ज्योति में उसकी हुए हम एक यात्रा
के लिए तैयार,

की उसी के आसरे हमने तिमिर-गिरि
घाटियाँ भी पार,

हम थके माँदे कभी बैठे, कभी
पीछे चले भी लौट,

किंतु वह बढ़ता रहा आगे सदा
साहस बना साकार,

आँधियाँ आईं, घटा छाई, गिरा
भी वज्र बारंबार,

पर लगाता वह सदा था एक—
अभ्युत्थान ! अभ्युत्थान !

हो गया क्या देश के

सबसे अचंचल दीप का

निर्वाण !

(९)

लक्ष्य उसका था नहीं कर दे महज
इस देश को आज़ाद,
चाहता वह था कि दुनिया आज की
नाशाद हो फिर शाद,

नाचता उसके दृगों मे था नए
मानव-जगत का खाब,

कर गया उसको अचानक कौन औ'
किस वास्ते बर्बाद,

बुझ गया वह दीप जिसकी थी नहीं
जीवन-कहानी पूर्ण,

वह अधूरी क्या रही, इंसानियत का
रुक गया आख्यान ।

हो गया क्या देश के
सबसे प्रगतिमय दीप का
निर्वाण !

(१०)

विष घृणा से देश का वातावरण

पहले हुआ सविकार,

खून की नदियाँ वहीं, फिर बस्तियाँ

जलकर गईं हो क्षार,

जो दिखाता था अँधेरे में प्रलय के

प्यार की ही राह,

बच न पाया, हाय, वह भी इस घृणा का

क्रूर, निन्द्य प्रहार,

सौ समस्याएँ खड़ी हैं, एक का भी

हल नहीं है पास,

क्या गया है रूठ प्यारे देश भारत-

वर्ष से भगवान !

हो गया क्या देश के

सबसे ज़रूरी दीप का

निर्वाण !

१७

ओ राष्ट्र महाकवि, राष्ट्रनाद, मैथिलीशरण ,
हो गया राष्ट्र के पुण्य पिता का महामरण ,
होकर अनाथ यह आर्त्त जाति माँगती शरण ,
कुछ कहो, देवता, दैन्य - शोक - संताप - हरण ।

तुम कहाँ छिपे हो ' युगप्रवर्तक सूर्यकांत ,
 युग-पुरुष लुप्त हो गया, तिमिर छाया नितांत ,
 संपूर्ण देश हो रहा आज दिग्भ्रांत, कलांत ,
 बिखराओ अपने प्रखर स्वरों की शीघ्र कांति !

मत रहो मौन यों, बहन महादेवी, बोलो ,
 कुछ तो रहस्य इस दुर्घट घटना का खोलो ,
 ओ नीर-भरी बदली, क्यों उमड़ नहीं आती ,
 क्या रक्त-सनी रह जाएगी मा की छाती ?

उठ 'दिनकर', भारत का दिनकर हो गया अस्त ,
 शृंगार देश का क्षार-धूम्र में ग्रस्त-ध्वस्त :
 वाणी के उदयाचल से ऐसी छेड़ तान ,
 तम का मसान हो नई रोशनी का निशान ।

तू कहाँ आज भाई शिवमंगल सिंह 'सुमन' ,
 है खड़ा हो गया वक्त आज बनकर दुश्मन ,
 वाणी में भरकर ब्रम्हचर्य हो जा तयार ,
 कर चुका नहीं है अभी शत्रु अंतिम प्रहार ।

खादी के फूल

तुमसे मेरी प्रार्थना, सुमित्रानन्द(न) पंत ,
संतों में सुमधुर कवि, कवियों में सौम्य संत
आ पड़ी देश पर, बंधु, आपदा यह दुरंत—
टूटे सत्यं, शिव, सुंदरता के तंतु-तंतु।

माने क्या हैं जो हुआ देश पर यह अनर्थ ,

बोलो वाणी के पुत्रों में सबसे समर्थ ,

वंदित वीणा पर गाकर अपना ज्ञान-गान
सुस्थिर कर दो भारतमाता के विकल प्राण ,
ले करामलकवत् भूत, भविष्यत, वर्तमान ,
ओ कविर्मनीषी, करो विश्व का समाधान।

१८

तुम पिए पड़े हो कहाँ, 'शायरे इन्क़लाब',
देखो, जो भारत के सिर के ऊपर अज़ाब,
गांधी की हत्या, जोश, बात कितनी अजीब,
अब करो होश, हिंदोस्तान के तुम नकीब।

खादी के फूल

तुम किस फिराक में पड़े हुए रघुपति सहाय ,
बापू के उठने से है भारत निःसहाय ,
शबनमिस्तान के मोती पर मत हो निसार ,
हिंदोस्तान के आँसू भी करते पुकार ।

हज़रते 'मोहानी' भारत के सबसे महान
नेता का फिरक़ेबंदी ने ले लिया प्राण ;
तुम अब भी इसके घेरे से बाहर आओ ,
अपने यौवन का क्रांतिपूर्ण स्वर दुहराओ ।

ओ 'जिगर', देश का जिगर गोलियों का शिकार ,
छाया है तुमपर अब भी जामों का खुमार ,
ख़्बाबी खुशियों में मुल्क-मुसीबत मत भूलो ,
गिरती कौमों के शायर ही दारोमदार ।

'सागर', अब संत तुम्हारा गांधी चला गया ,
वह नफ़रत के कालिया नाग से छला गया
इस दो मुँह-जिह्वा के ज़हरीले कीरे को
कीलो कोई जादू का गाकर गीत नया ।

सर्दार जाफ़री, जाति आज सर्दार हीन ,
भारत माता का चेहरा मातम से मलीन ,
इंसानों में से इंसानियत मिटाने को
तैयार आज हिंदू-मुस्लिम के धर्म-दीन ।
तेरी ज़वान में ताक़त है, दिल है दिलेर ,
है जानदार तेरी कविता का शेर-शेर ,
उठ अपना रोशन क़लम उठा, मत लगा देर ,
मुल्की सियाहपन को करना है हमें ज़ेर ।
है हमें बनाना नया एक हिंदोस्तान ,
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई जिसमें समान ।

१६

इस शामेवतन में इतना गहरा अंधकार,
वेकार लग रहा सुब्हेवतन का इंतज़ार,
'वकबस्त' याद आते हैं मुझको बारबार,
चक्कर दिमाग़ में करते हैं उनके अशार—

“सदा यह आती है फल, फूल और पत्थर से ,
जमीं पे ताज गिरा कौमे हिंद के सर से ।

तुम्ही को मुल्क में रोशन दिमाग़ समझे थे ,
तुम्हे ग़रीब के घर का चिराग़ समझे थे ।

जो आज नश्वोनुमा का नया ज़माना है -
यह इन्क़लाब तेरी उम्र का फ़साना है ।

वतन की जान पे क्या-क्या तबाहियाँ आईं,
उमँड-उमँड के जहालत की बदलियाँ आईं,
चिराग़ अमन बुझाने को आँधियाँ आईं,
दिलों में आग लगाने को बिजलियाँ आईं ।
इस इंतशार में जिस नूर का सहारा था ,
उफ़क पे कौम की वह एक ही सितारा था ।

हदीसे-कौम बनी थी तेरी ज़बाँ के लिए ,
ज़बाँ मिली थी मुहब्बत की दासताँ के लिए ,
खुदा ने तुम्हको पयंबर किया यहाँ के लिए ,
कि तेरे हाथ में नाकूस था अज़ाँ के लिए ।

खादी के फूल

खुदा के हुक्म से जब आबो-गिल बना तेरा ,
किसी शहीद की मिट्टी से दिल बना तेरा ,
जनाजा हिंद का दर से तेरे निकलता है ,
सुहाग कौम का तेरी चिता में जलता है ।

अज़ल के दाम में आना है यों तो आलम को ,
मगर यह दिल नहीं तैयार तेरे मातम को ,
पहाड़ कहते हैं दुनियां में ऐसे ही ग़म को,
मिटा के तुझको अज़ल ने मिटा दिया हमको ।

तेरे अलम में हम इस तरह जान खोते हैं ,
कि जैसे बाप से छुटकर यतीम रोते हैं ।

ग़रीब हिंद ने तनहा नहीं यह दाग़ सहा ,
वतन से दूर भी तूफ़ान रंजोग़म का उठा

रहेगा रंज ज़माने में यादगार तेरा ,
वह कौन दिल है कि जिसमें नहीं मज़ार तेरा ,

जो कल रकीब था वह आज सोगवार तेरा ,
खुदा के सामने है मुल्क शर्मसार तेरा ।”

ग़मभरी नज़म यह बारबार मैं पढ़ता हूँ ,
जब-जब पढ़ता हूँ, अपने मन में कहता हूँ—
गोखले-निधन पर लिखे गए यह बंद अमर
लागू होते हैं बापू पर अक्षर-अक्षर

बापू ने उनको अपना गुरु बनाया था ,
जो गुण-गौरव उनके जीवन में पाया था ,
बापू ने तप से उनकी सीमा चरम छुई ,
जो कही गुरु पर गई. शिष्य पर बैठ गई ।

दृष्टा तुम थे, 'चकबस्त', नहीं केवल शायर ,
दे गए उसे तुम तीस बरस पहले ही स्वर ,
जो महा आपदा हिंद देश पर आनी थी
सच कह दो, तुमको क्या यह घटना जानी थी ?

भारत-परस्त मौजूद आज यदि तुम होते ,
होशोहवास ऐसे न हिंद के गुम होते ,
हस्तियाँ कहाँ अब ऐसी जो सुन पाती हैं ,
मरने पर जो आवाज़ चिता से आती है

खादी के फूल

तुम आज अगर होते—होना भी था मुमकिन ,
तुम यौवन में ही महाकाल से हुए उच्छ्रित ,
यह सदमा खाया देश बड़ा धीरज पाता ,
यह आज तुम्हारे मरने पर भी पछताता !

२०

ओ सरोजिनी वह तेरी ओजभरी वाणी ,
हिंदोस्तान की आवाजों की पटरानी ,
हो गया निछावर एक जमाना था जिसके
तेवर, मिठास, अंदाज़, साज़ पर लासानी ,
जिसने भारत की सोने की ड्योढ़ी पर से
आशा-उमंग का नया तराना गाया था
जिसने सदियों से सोए युवक-युवतियों को
किरणों के आँगन में हँसना सिखलाया था
जिसमें था भारत ने पिछला जौहर खोला ,
जिसमें था आनेवाला दिन-सपना बोला ,
जिसमें मदिरा का मतवालापन तो था ही ,
तूने जिसमें था दिल का अमृत भी घोला ।

खादी के फूल

ओ सरोजिनी, वह तेरी ओज भरी वाणी,
खो गई कहाँ है आज, बता तो, कल्याणी,
चल बसा अचानक तेरे गुलशन का माली,
रोता पत्ता-पत्ता, रोती डाली-डाली,
मलयानिल भी अब सायँ-सायँ -सा करता है,
जैसे इस ग़म में वह भी आहें भरता है,
तू ही क्यों चुप है, बतला तो, कोकिलबयने,
माना हमने, तेरे तो टूट गए डेने,
लेकिन कवि तो दुख में भी गाता जाता है,
क्या याद नहीं है शेली जो बतलाता है—
जिन गीतों में शायर अपना ग़म रोते हैं,
वे उनके सबसे मीठे नग़मे होते हैं।

इससे बढ़कर क्या ग़म भारत पर आएगा,
तू मौन रहेगी तो फिर कौन बताएगा,
बर्दाश्त किया क्या मा भारत की छाती ने,
सिर झुका दिया कितना उसका आघाती ने,
किस पछतावे की ज्वाला उसे जलाती है,
कैसे वह अपने मन को धीर बँधाती है
ओ सरोजिनी, यदि आज नहीं तू गाएगी,
भारत के दिल की दिल में ही रह जाएगी।

बुलबुले वक्त्र, है हमको अब भी इंतज़ार ,
जो हुआ देश के मधुवन पर वज्रप्रहार
उससे तेरे दिल में जागेगी एक आग ,
संसार सुनेगा पीड़ा का अनमोल राग ,
तेरे सफ़ेद बालों पर जाती हैं आँखें
लेकिन ये उनसे ज़रा नहीं घबरातीं हैं,
है कहा किसी ने, जब शायर बूढ़ा होता ,
उसकी कविता तब नौजवान हो जाती है।

२१

यदि होते बीच हमारे श्री गुरुदेव आज ,
देखते, हाय, जो गिरी देश पर महा गाज ,
होता विदीर्ण उनका अंतस्तल तो ज़रूर ,
यह महा वेदन
किंतु प्राप्त
करता वाणी ।

शे नहीं रहा है व्यक्त आज मन का उबाल ,
शब्दों के मुख से जीभ किसी ने ली निकाल ,
किस मूल केंद्र को बेधा तूने, समय क्रूर ,
घावों को धोने
को अलभ्य
दृग का पानी ।

होते कवींद्र इन काली घड़ियों के त्राता ,
होते रवींद्र तो मातम का तम कट जाता ,
सत्यं, शिव, सुंदर फिर से थापित हो पाता ,
मरहम-सा बनकर देश-काल को सहलाता ,
रहते वे
गायक-नायक
ज्ञानी-ध्यानी ।

२२

'इक़बाल' कब्र के अंदर सोते मौन आज ,
मर्सिया कौम का गा सकता है कौन आज ,
फ़िरक़े बंदी के प्रोत्साहक वे थे अवश्य ,
परिणाम देखकर

शायद आज

बदल जाते ।

हिंदोस्तान पर उनका एक तराना था ,
है देश-प्रेम क्या ? हमने उससे जाना था ,
बुलबुलें गुलिस्ताँ में जैसे गातीं, उसको
हम गाते-गाते

हो जाते थे

मदमाते ।

आवाज़ देश के कोने-कोने में जाती ,
प्रतिध्वनित उसे करती हर जिह्वा, हर छाती ,
सदमा पहुँचे हृदयों को ढाढ़स बँधवाती ,
वह संगदिलों को भी अंदर से पिघलाती ,
बापू के मरने पर जो हमें दबाए है ,
उस महा व्यथा को

यदि वे वाणी

दे पाते ।

२३

भारत पर आकर टूटी है क्या आधि-व्याधि,
अरविंद, आज देखो तजकर अपनी समाधि,
गांधी को हमसे छीन ले गया महा व्याधि,
हम खड़े विश्व

क आगे हो

निर्धन-अनाथ ।

पाया खोंद्र ने भारत का हृदयस्पंदन,
गांधी ने, उसका हाथों का कर्मठ जीवन,
तुमने, उसका विज्ञान-योग, मानस-चित्तन,
तुम तीनों को

पा किया देश ने

उच्च माथ ।

गुरुदेव बहुत पहले ही थे मुँह गए मोड़
बापू भी अपना नाता हमसे गए तोड़
वे, हाथ, भरोसे किसके हमको गए छोड़
रखो स्वदेश पर

स्वामिन् अपना

वरद हाथ ।

२४

रघुपति, राघव, राजा राम ,
पतित - पावन सीताराम !

युग के सबसे बड़े पुरुष को
सबसे छोटे ने मारा ,
सबसे खोटे ने मारा ,
दिल्ली ही क्या, भारत ही क्या, सारी दुनिया में कुहराम !
रघुपति, राघव, राजा राम ,
पतित - पावन सीताराम !

मानवता को जीवित रखना
था जिसका जीवन सारा,
दानवता के प्रतिनिधि द्वारा उसका हो ऐसा अंजाम
रघुपति, राघव, राजा राम ,
पतित - पावन सीताराम !

भारत की किस्मत का टूटा
सब से तेजोज्वल तारा,
हाय-हाय, हतभागा दिन यह, हाय-हाय, हतभागी शाम ।
रघुपति, राघव, राजा राम ,
पतित - पावन सीताराम !

२५

हो गया गर्व भारत माता का आज चूर,
कल कटा देश, चल वसा देश का आज नूर,
नक्षत्र बुरे कुछ इस धरती के आए हैं,
अब भी इसपर
विपदा के बादल
छाए है

जो मरे-कटे वे कैसे वापस आ सकते,
हल, चलो, मिला तुमको इस आफत का सस्ते,
घर-वार-द्वार से लेकिन लाखों उखड़ गए,
जो बसे हुए थे
सदियों से वे

उजड़ गए।

तलवार भूलती काश्मीर की किस्मत पर,
हैदरावाद बारूद विद्याने में तत्पर,
नताओं में आपस के भगड़े ठने हुए,
संयोग बुरे दिन
के हैं सारे
बने हुए।

जो सी रुकावटें रहते पंथ बनाता था,
घन अंधकार में भी मशाल दिखलाता था,
उसको हमने अपने हाथों बलि चढ़ा दिया,
हमने खुद अपने
मिटने का

सामान किया।

२६

इस महा विपद में व्याकुल हो मत शीश धुनो
अरविद संत के, घर अंतर में धीर सुनो

यह महा वचन विश्वास और आशादायी—

दृढ़ खड़े रहो

चाह जितना हो

अंधकार।

है रही दिखाती तुम्हें मार्ग जो वर्षों से
जो तुम्हें बचा लाई है सौ संघर्षों से,

वह ज्योति, भले ही नेता आज धरशायी,

है ऊर्ध्वमुखी

वह नहीं सकेगी

कभी हार।

मिथ्यांध मोह-मत्सर को जीतेगा विवेक

यह खंडित भारतवर्ष बनेगा पुनः एक,

इस महा भूमि का निश्चय है भाग्याभिषेक,

मा पुनः करेगी

सब पुत्रों का

समाहार !

२७

कलमँष-कलुष-धँसी धरती पर
 एक बिम्बा का आसन ध्वस्त,
 महा निराशा अंधकार में,
 हाय, हुआ सब अग-जग लय,
 तमसो मा ज्योतिर्गमय !

हाड़ - मांस - भज्जा - लोहू में
 बापू थे क्या निहित समस्त,
 नहीं बने थे क्या वे उन
 तत्त्वों से जो अब्दय-जथय,
 असदो मा सद्गमय !

हुई चिता के अस्ताचल पर
 बापू की मृत काया अस्त,
 केवल उनकी छाया अस्त,
 नई ज्योति से, नए क्षितिज पर
 आत्मा का नक्षत्र उदय !
 मृत्योर्मा अमृतंगमय !

२८

✓ भारतमाता का सबसे प्यारा बड़ा पूत
हो गया एक के पागलपन से पराभूत,
हो गया एक के क्रुद्ध तमंचे का शिकार,
यह तो निरभ्र
नभ-मंडल से
है वज्रपात ।

वह एक नहीं, वह सदियों का है अंधकार
जिससे बापू हमको लाए मर-पच उबार,
अंतिम प्रयत्न यह उसका, छाए दुर्निवार
इस तम को मरना ।
था, यदि होना
था प्रभात ।

वह थे भविष्य भारत के दुर्जय प्रभ प्रतीक—
यदि कवि के मन में इस घटना का अर्थ ठीक—
कर लिया आज, उनपर कर गोली से प्रहार,
दकियानूसी
हिंदोस्तान ने
आत्मघात ।

२६

जब वर्षों हमने खून-पसाना एक किया,
तब भारत के जीवन में ऐसा दिन आया,
हम आजादी के मंदिर का निर्माण करें,
थापें उसमें
आजादी की
प्रतिमा सुंदर

मंदिर का भव्य, विशाल, मनोहारी नक्शा,
था नाच रहा सपने-सा सब की आँखों में,
माकार उसे करने को सत्य धरातल पर
संपूर्ण जाति
बस होने को ही
थी तत्पर।

लेकिन कैसे देवता हमारे रूठ गए
अब हम इन थोथे नक्शों को लेकर चाटें,
जो मूर्ति प्रतिष्ठित होने को थी मंदिर में,
वह पड़ी हुई है
लो, टुकड़े-टुकड़
होकर!

३०

यह गांधी मरकर पड़ा नहीं है धरती पर,
यह उसकी काया-काया होती है नश्वर,
गांधी संज्ञा वह जो है जग में अजर-अमर,
दी उसने केवल

जीवन क

चादर उतार।

सुर, नर, मुनि इसको अपने तन पर लेते हैं,
दुनिया ही ऐसी है—मैली कर देते हैं,
कुछ ओढ़ जतन से उधों की त्यों धर देते हैं,
दी उसे तपोधन

गांधी ने तप

से सँवार।

मरना जीवन की एक बड़ी लावारी है,
उसके आगे खिल्कल ने मानी हारी है,
बापू का मरना जीने की तैयारी है,
बापू का मरना

सौ जीने से

नेरदार।

३१

वे तो भारतमाता की पावन वेदी पर,
कर चुके बहुत पहले थे तन-मन न्योछावर,
उनको मरने का खौफ नहीं था राई भर,
उनको ममता का
लेश नहीं था
जीने पर।

वामतलव था उनका हर काम जमाने में,
विश्वास नहीं वे रखने थे दिखलाने में,
कुछ अर्थ छिपा था उनके गोली खाने में,
क्या क्रोध करें
हम नाथूराम
कमीने पर।

नंगे भारत के लिए बने नंगे फकीर,
भूखे भारत के लिए सुखा डाला शरीर,
पीड़ित भारत की सही हृदय में मर्म पीर,
घायल भारत के
घाव भी लिए
सीने पर।

३२

जो गोली खाकर गिरी, मरी, वह थी छाया,
है अजर-अमर उसके आदर्शों की काया,
भारत ने जिनको युग-युग तपकर उपजाया,
थे हाड़ मांस

के व्यक्ति नहीं

बाबा गांधी ।

जो पकड़ गया है वह तो है केवल छाया,
कितने दिल में पङ्कत्री ने आश्रय पाया,
कितने कुत्सित भावों ने उसको दी काया,
वह एक नहीं है

इस पातक का

अपराधी ।

मन के अंदर बिठलाकर नफ़रत के मूज़ी
की प्रतिमा, अपने से पूछो कितनी पूजी ?
जिस भव्य भावना के प्रतीक थे बापू जी,
तुमने कितनी

वह अपने जीवन

में साधी ?

३३

जिसने युग-युग से दवे हुआओं को दी आशा,
जिसने गूँगों को दी अधिकारों की भाषा,
जिसने दीनों में छिपी दिव्यता दिखलाई,
जिसने भारत की

फूटी किस्मत

दी सँवार;

जिसने मुर्दों में प्राणों का संचार किया,
जिसने जनता के हाथों वह हथियार दिया,
जिसके आगे साम्राज्यों ने मुँह की खाई,
जिसने सदियों की

लदी गुलामी

दी उतार;

—गोली जो हो जाए छाती के आर-पार,
—गोली जो करे प्रवाहित जीवन-रक्तधार,
—गोली जो कर दे टुकड़े-टुकड़े श्वास-तार,
एहसानमंद

भारत का उसको

पुरस्कार!

३४

जिन आँखों में करुणा का सिंधु छलकता था,
सबको अपनाते का सद्भाव ललकता था,
जिन आँखों में स्वर्गों का नूर झलकता था,
वे मुँदीं; नहीं

तारावलि नभ में

थरमाई ?

जिस जिह्वा से ऐसा जीवन् रस गरता था,
पीड़ा हर, युग-युग के वात्रों को भरता था,
जिस जिह्वा से अमृत का निर्भर भरता था,
वह रुकी; नहीं

पृथ्वी की छाती

थरमाई ?

शत्-शत् माताओं की वत्सलता से निर्मित,
शत्-शत् माताओं की ममता से आलोड़ित,
बापू की निश्छल छाती छकनी-सी छिद्रित,
क्या तुमने देखी

और न आँखें

पथराई ?

३५

जिसने रिवाजवर तेरे आगे ताना था,
बापू, बतला, तूने क्या उसको माना था,
जो तूने उसको युग कर बद्ध प्रणाम किया ?
जग की, तेरी
आँखों में किन्ना .
अंतर है !

वह दुनिया भर की नज़रों में हत्यारा था,
लेकिन निःसंशय वह भी तुझको प्यारा था
उसको भी तूने अपना अंतिम स्नेह दिया,
देखा, प्रभु की
छाया उसके भी
अंदर है ।

तू बोल अगर सकता तो निश्चय यह कहना—
साईं जिसको जितने दिन रखता है, रहता,
उसने जब चाहा मुझको अपनी शरण लिया,
यह तो केवल
हरि की इच्छा
का अनुचर हूँ ।

३६

अंतिम क्षण में जो भाव हृदय में स्थित होता,
उसमे ही आत्मा का भविष्य निश्चित होता,
प्रार्थना सभा में जाते तुमने प्राण दिए,
पाई होगी

तुमने प्रभु चरणों

की छाया ।

जन्मन जोर गये अनि दुःसह दुख होना,
तन दर्जन पल-पल क्या-क्या काट नहीं ढोता,
तुमने क्षण में तन-जीर्ण-व्रमन को दूर किया,
की मुक्ति वरण

ठुकराकर

मिट्टी की काया ।

कर कोटि जतन मुनि तन-मन-प्राण खपाते हैं,
पर अंत समय में राम नहीं कह पाते हैं,
तुमने अंतिम श्वासों से 'राम' पुकार लिया,
ऋषि-मुनि-दुर्लभ

पद आज सहज

तुमने पाया ।

३७

नाथू किसको पिस्तौल मारने को लाया,
थी गलित-पलित जिसकी जन-सेवा में काया ! --

काया ही केवल वह उनकी छू सकता था,
काया का बल था वापू ने कब दिखलाया,
थी बुद्धि कहाँ।

उस जड़ मिट्टी के

घोंघा की ।

खादी के फूल

उस ज़ेरा-बख़्तर से थे वे सज्जित-रक्षित,
जो सत्य-अहिंसा के तत्वों से था निर्मित,
ले चुकी परीक्षा थी जिसकी तप की ज्वाला,
थी एक ढाल उनकी ईश्वर निष्ठा निश्चित,
थी हिम्मत ही
हथियार हमारे
जोधा की।

था राजसूय का यज्ञ हुआ पूरा सकुशल,
गतिमान हुआ था आज़ादी का अश्व चपल,
फिरकेबंदी ने उठ उसका पथ रोका था,
वह डटा हुआ था उससे लड़ने को अविचल,
यह कैसा मख-विध्वंसी पागल प्रकट हुआ,
बलि की उसने
भारत के भाग्य-
पुरोधा की।

३८

जब से था हमने होश सँभाला उनका स्वर,
मखरित करते थे ग्राम, नगर, गिरि, वन-प्रांतर,
सूरज से थे नभमंडल में वे उदय हुए,
हम गांधी की
दुनिया में जन्मे,
बड़े हुए।

चिड़ियाँ उनके गुण की गाथाएँ गातीं थीं,
दिग्बधुएँ उनके तप की शक्ति बताती थीं,
उनसे उत्साहित सहज हमारे हृदय हुए,
हम गांधी की
दुनिया में उठकर
खड़े हुए।

व राह कठिन, पर सच्ची ही दिखलाते थे,
चलकर उसपर खुद चलना भी सिखलाते थे,
खुद जल-जलकर पथ पर आभा बिखराते थे,
वे गांधी के
हम अधिकार में
पड़े हुए।

३६

था जिसे नहीं परदेशी शासन का कुछ डर,
जिम्ने बतलाया था नाचारे ताकतवर,
ऐसे बेजोड़ बहादुर नेता को पाकर
हम सबने अपने

को खुशकिस्मत

समझा था ।

हमने उसके तन में भारत का तन देखा,
हमने उसके मन में भारत का मन देखा,
उसके जीवन में भारत का जीवन देखा,
हमने उसका व्रत

भारत का व्रत

समझा था ।

उसके हँसने में गंगा-जमुना लहराईं,
हाथों ने भारत की सीमाएँ सहलाईं,
पच्छिमी-पूरबी घाट लगे दृढ़ पग उसके,
सीने में झलकी हिंद-सिंधु की गहराईं,
उसका मस्तक हमने

हिम पर्वत

समझा था।

वह भागत की संस्कृति-साधो से एक हुआ,
उसका पिढ्यलगा हुआ हमसे से प्रत्येक हुआ,
मिथ्या जो उसको था सत्रने मिथ्या माना,
सत जिसे कहा

उसने, सब ने सत

समझा था।

बे गांधी भारत कब अनुमाना जाता है,
बे गांधी भारत कब पहचाना जाता है,
अब अपना परिचित देश हुआ है बेगाना,
बचपन से हमने

उसको भारत

समझा था।

४०

हत्यारे गोरों की यौवन में सही मार,
जालिम पठान का भी ओड़ा दंडप्रहार,
लोहू-लुहान होने पर भी जो बचे प्राण,
कुछ काम दे गई

किस्मत भारत

माता की ।

जीवन को आश्रम के तप संयम से साधा,
जेलों की दीवारों में अपने को बाँधा,
कर लिया स्वयं को देश-दीनता का प्रमाण,
क्षण भर को भी

तृण से सुख की

कब इच्छा की ।

तुम मारे-मारे फिरे लिए काया जर्जर,
तुमने रक्खे कितने ही अनशन व्रत दुर्धर,
दुख-ग्लानि-वेदना रहे तुम्हारे चिर सहचर,
बस एक शहादत

मिलनी तुमको

थी बाकी ।

बच गई तुम्हारी ट्रेन उलटने से तिल-तिल,
बम फटा निकट ही, सके न तुम रत्ती भर हिल,
इस इज्जत को थी खोज तुम्हारी अरसे से,
हो गई सफल

जनवरी तीस की

चालाकी ।

४१

घर तुमको जनता के हित कारागार हुआ,
तप, त्याग, साधना, दम, संयम, शृंगार हुआ,
उपहान, व्यंग, आक्रोश, रोष उपहार हुआ,
तुमने मानवता के

हिन क्या-क्या

सहन किया।

हर मुहिम-मोरचे पर की तुमने अगुआई,
जो बात कही वह पहले करके दिखलाई,
संसार जानता नहीं तुम्हारा-सा जेता,
दायित्व देश भर

का कंधों पर

वहन किया।

तुम गजाओं में राजा गाय-परायण थे,
तुम बीच दरिद्रों के दरिद्र नारायण थे,
जन में हरिजन, तुम नेताओं के थे नेता,
अब तुमने ताज

सहादत का भी

पहन लिया।

४२

जी महिमावानों की महानता दिखलाई,
जत्र मौन मिली महिमावानों की-सी पाई,
वे मृत्यु महद्, शुचि, सुंदर इससे क्या पाने,
हम शोक मना

गकते अपनी

धनि पर भारी ।

उनके हाथों भारत का अभ्युत्थान हुआ
मन और अहिंसा का फिर से सम्मान हुआ,
उनका जीवन शापित जग को वरदान हुआ,
कर सिद्ध गए

वे एक पुरुष थे

अवनारी ।

वह मृत्यु जिसे सुकरात सुधी ने पाई थी,
वह मृत्यु जिसे ईसा ने गले लगाई थी,
वह मृत्यु जिसे पाने को देव तरस जाते,
उस अमर मरण के

सहज बने वे

अधिकारी ।

४३

यह जग अपना मग भूला हुआ मुसाफिर है,
चिर चंचल है, चिर विह्वल है, चिर अस्थिर है,
पथदर्शक इसको मिलते रहते बहुतेरे,
पर परित्राण

का ही इसके

संग्रोग नहीं ।

ले स्वर्ग सँदेसा तुम भी पृथ्वी पर आए,
भूले पथ तुमने एक बार फिर दिखलाए,
पिछले नबियों का भाग्य तुम्हें भी था घेरे,
तुमको भी समझे

इस दुनिया के

लोग नहीं ।

तुम अपने तप से ऊपर उठते चले गए,
पर हम पापों से नीचे धँसते चले गए,
तुम हमें छोड़कर स्वर्ग लोक को भले गए,
रह गई धरा थी

देव तुम्हारे

योग्य नहीं ।

४४

भारत के आँगन में जो आग सुलगती थी,
उसकी ज्वाला तुमको ही आकर लगती थी,
जो आँख तुम्हारी जल की धार बहाती थी,
उससे भारत क्या, पृथ्वी पूर्ण नहाती थी,
किस तप से तुमको
थी यह अद्भुत

शक्ति मिली ?

खादी के फूल

क्या घृणा गई फैलाई बहरा देश हुआ,
अनसुना तुम्हारा दया-प्रेम-संदेश हुआ,
परिवर्तित भारत का चिर परिचित वेग हुआ,
यह देश तुम्हें, हे बापू, कितना क्लेश हुआ,
उन आदर्शों को लोग लगे देने घोखा
जिनको उगकी

थी एक समय पर

भक्ति मिली ।

तन क्षीण तुम्हारा देह-दुःख मे गलता था,
मन क्रोमल उगके पाप-नाप से जलता था,
गुन-द्वेष अधट घटनाएँ प्राण नि-कलता था,
जीवन अब तुमको एक-एक क्षण खलता था,
हम भेलेंगे जो हथ हमाग अब हीगा,
तुमको तो, बापू,

मर्त्य कष्ट से

मुक्ति मिली ।

४५

तुमने गुलाम हिंदोस्तान में जन्म लिया,
अपना सारा जीवन इसमें ही बिता दिया,
मिट जाय गुलामी; और इसी तप का यह फल
तुम मरे आज
आजाद हिंद की
धरती पर।

हिंदू-मुस्लिम थे एक दूसरे के दुश्मन
तुम उनमें मेल कराने का ले बैठे प्रण,
इच्छित फलदायी सिद्ध हुआ पिछला अन्गन,
अब दोनों अश्रु
बहाते हैं
तुमपर मिलकर।

बंदी जीवन से गुप्त हुई भारत माता,
हिंदू-मुस्लिम उद्यत कहलाने को भ्राता !
तुम जभी छोड़ते हमको हम होते विह्वल,
पर कहाँ तुम्हारे जग से जाने को जाना,
इस से उत्तम,
उपयुक्त और
बेहतर अवसर।

४६

हम घृणा-क्रोध-कटुता जितनी फैलाते थे,
वे तप ज्वाला से अपनी नित्य पचाते थे,
कर गई मौत उनको हरि-चरणामृत अर्पण,
वे नित्य ज़हर का
प्याला चूमा

करते थे।

पद मिला उन्हें जिसके थे वे चिर अधिकारी,
हम समझे थे ग़लती से उनको संसारी,
कर्त्तव्य निरत भू पर उनका था छाया तन
प्रभु-गोदी में
मम से वे भूमा

करते थे।

वे बहुत दिनों से थे मरने से निडर हुए,
वे तो मरने के पहले ही थे अमर हुए,
कातिल, तूने काटी केवल अपनी गर्दन,
वे शीश हथेली

पर ले घूमा

करते थे।

४७

लड़नेवालों में तुम-सा कौन लड़ाका था,
हर एक देश में बँधा तुम्हारा साका था,
औ' शांति करानेवालों के तुम थे राजा,
खुलनेवाली थी

आँख जल्द ही

दुनिया की ।

वह शक्ति दिखाई तुमने सिंहासन डोले,
सत्ताधारी सम्राट तुम्हारी जय बोले,
तुमने सगर्व भगी बस्ती को अपनाया,

लघुतम-महानतम

दोनों ही से

समता की ।

था दोस्त दिखाई देता तुमको दुश्मन में,
तुम प्रेम-सुधा बरसाते थे समरांगण में,
पर्वत-सी आत्मा रखते थे तृण से तन में,
थे शाहंशाह छिपाए अपने मंगन में,
था एक विरोधाभास तुम्हारे जीवन में,
तुमने मरकर

अपना ली राह

अमरता की ।

४८

वे अग्नि पताका ले दुनिया में आए थे,
वे स्वर्दूर्तों के, देवों के समभाए थे,
सौ भौंति प्रलोभन उनके पथ में आए थे,

पर ध्यान उन्हें था

सब दिन अपने

व्रत-प्रण का ।

व नहीं चैन से या सुख से रह सकते थे,
वे नहीं विलासों, वैभव में बह सकते थे,
वे नहीं शिथिलता, दुर्बलता सह सकते थे,

जब तक अस्तित्व

कहीं पर भी था

तम धन का ।

जीवन में जलने का ही था उनका निश्चय,
वे जला किए, तम हरा किए अविरत निर्भय,

प्रज्वलित दीप बुझन के पहले हो उठता,

होकर शहीद सौ गुने हुए वे तेजोमय,

यह चरमविदु था

समुचित उनके

जीवन का ।

४६

बापू, कितने ही तेरे एक इशारे पर
फाँसीवाले तख्तों पर भूले हँस - हँसकर,
कितनों ने निर्दय गोली की बौछारों में
निर्भय होकर

अपनी चौड़ी

छाती खोली।

तू खाँस-खाँसकर बिस्तर पर गर मर जाता,

[जाना सब को होता जो दुनिया में आता।]

पहुँचाया जाता स्वर्गलोक के प्यारों में,

लज्जित होता

देख शहीदों

की टोली।

तू आज शहीदों का राजा, ओ अभिमानी,

तू सिद्ध शहीदों का अधिकारी सेनानी,

तेरी छाती ने भी गोली खानी जानी,

तूने भी अपने

लोहू से

खेली होली।

५०

जब कानपूर के हिंदू-मुस्लिम दंगे में
वह शिष्य तुम्हाग सत्य-अहिंसा अनुयायी
खाली हाथों था घुमा भेड़ियों के दल में
औ' क़त्ल हुआ था

उनकी ही

रक्षा करते,

तब बापू तुमने अपने पीड़ित अंतर से
उद्गार किए थे व्यक्त इस तरह शब्दों में,
'मुझको गणेश शंकर से ईर्ष्या होती है,

भगवान काश

यह पावन मृत्यु

मुझे मिलती !'

सच्चे दिल से निकली ऐसी सच्ची वाणी
की नहीं उपेक्षा परमेश्वर कर सकता था,
अब तो ईर्ष्या करने का कोई ठौर नहीं,

जाओ गणेश

शंकर से भुज भर

गले मिलो ।

तुम अमर शहीदों के चिर पावन लोह से
धोए पथ पर, हे बापू, अपने चरण धरो,
इस वीर पंथ को छूकर और प्रशस्त करो,

मानव, मानव की दुनिया है इतनी अपूर्ण

होगा बहुतों को

अभी इसी पथ

से जाना ।

५१

वे तप का तेज लिए थे अपने आनन पर,
सूरज से चमके आकर जग के आँगन पर,
वे जले कि जगती में उजियाला फैल गया,
वे जगे कि सोई

सदियों को भी

जगा गए।

तम कटा विश्व ने एक नई आभा जानी,
जिसमें निष्प्रभ हो गए युगों के अभिमानी,
भर दलित-मर्दितों के अंदर उत्साह नया,
वे उनका सारा

भ्रम, संशय, भय

भगा गए।

हो सके न विचलित अपने पथ से वे क्षण को,
अपना वे कब समझे थे अपने जीवन को,
जीना तो उनका अर्पित ही था जन-गण को,
मरने को भी

वे जन सेवा

में लगा गए।

५२

सुकरात संत ने पिया ज़हर का प्याला था,
मीरा ने उसको चरणामृत कह ढाला था,
ऋषि दयानंद को पड़ा उसीसे पाला था,
हस्तियाँ इसी

पैमाने की

विष पीती हैं।

हज़रत ईसा को चढ़ा दिया था सूली पर,
तन था नश्वर, लेकिन आत्मा थी अविनश्वर,
वह आज किए घर, कितनों के मन के अंदर,
वह वर्तमान,

सदियों पर सदियाँ

बीती हैं।

हम बापू को कब तक रख सकते थे अगोर,
हैं जन्म-निधन जीवन डोरी के ओर-छोर,
कितना महान आदर्श हमें वे गए छोड़,
कौमें ऊँचे

आदर्शों से ही

जीती हैं।

५३

जब देव-असुर दोनों ने मिलकर सिंधु मथा,
तब चौदह रत्नों में अंतिम अमृत निकला,
उस मधु रस के ऊपर कितना संघर्ष हुआ,
देवों ने किस

छल-बल से उसको

छक पाया ।

बापू ने एकाकी अंतर-सागर मथकर
तप से, अलभ्य मानवतामृत को प्राप्त किया,
हैं सत्य-अहिंसा रूप और गुण इसके ही,
जो प्राप्त किया

बापू ने सबपर

वरसाया ।

अमृत रहता है ज़हर-लहर के घेरे में
बे लड़े ज़हर से उसको पाना मुश्किल है,
बापू ने जीवन-सुधा लुटाई औरों में,
विष में केवल

अपने प्राणों को

भुलसाया ।

५४

वह सत्य अहिंसा का सागर था चिर निर्मल,
था नहीं सतह में, तह में तिनके भर का बल,
उसने कब जाना था जग का छोटापन, छल,
ये डाल सके थे

उसपर छाया-

छाप नहीं ।

८१

खादी के फूल

हमने मिथ्या से सत्य नामा चाहा था,
हमने हिंसा से सिन्धु दया का थाहा था,
खुदगर्जो से फैयाजी को अवगाहा था,
उसकी गहराई

की हो पाई

माप नहीं ।

हमने उसके आदर्शों पर बोली मारी,
हमने उसके वक्षस्थल पर गोली मारी,
अवतार क्षमा का वह जग में कहलाएगा,
आया उठकर

उमके होठों पर

शाप नहीं ।

आत्मा बापू की माफ़ करे नरघातक को,
शामिल जिसमें सब जाति हुई उस पातक को,
इतिहास कभी यह पाप नहीं बिसराएगा,
इतिहास करेगा

क्षमा कभी

यह पाप नहीं ।

५५

बापू के तन से बेज़बान लोहू बहकर,
उनका शरीर ढकनेवाली चादर रँगकर,
उनके पायों के नीचे की धरती तरकर
क्या सूख गया ?

क्या सूख सदा के

लिए गया ?

खादी के फूल

उनके लोहू के धब्बे हैं हर दामन पर,
उनके लोहू से लाल करोड़ों के हैं कर,
भारत की चप्पा-चप्पा भूमि उसीसे तर,
कसने समझा, उस जर्जर पंजर के अंदर

इतना लोहू है,

इतना ज्यादा

लोहू है !

हाथों पर, कपड़ों पर, ज़मीन पर मचल-मचल
वह कहता है, 'तुम हो कातिल, तुम हो कातिल !'
चुप होना उसका बरसों-सदियों तक मुश्किल,
आनेवाली अनगिनत पीढ़ियों के सिर पर
चढ़वर बापू का खून पुकारेगा बेडर !.....

तुमने उसको

गुलती से समझा

बेजबान ।

५६

भारत के हाथों पाप हुआ ऐसा भारी,
है लगी हुई संपूर्ण जाति को हत्यारी,
इस महा दोष का यदि करना है प्रायश्चित्त,
अनुताप आग में
हमें युगों तक
जलना है।

हम भटक-भटककर मरुथल में मर जाएँगे,
निर्मल स्रोतों की राह नहीं हम पाएँगे,
यदि हमें पहुँचना है मनचाही मंजिल तक
हमको उनके
बतलाए पथ पर
चलना है।

वे नहीं महज भारत के भाग्य विधाता थे,
वे सारी भावी दुनिया के भय-त्राता थे,
कर लेना है यदि उसको अपना अंत नहीं
वे साँचे थे,
जिसमें मानव को
ढलना है।

५७

हम सब अपने पापी हाथों को मलते हैं,
हम सब पद्मतावे की ज्वाला में जलते हैं,
लेकिन अब हम चाहे जितना रोएँ-धोएँ
वह लौट नहीं
सकता, जो स्वर्ग
सिधारा है।

दो बात नहीं करने पाए हम विदा समय,
तुम लोह से कह गए, हमारा भरा हृदय,
हमने जीकर भारत के भाल कलंक दिया
तुमने मरकर
भारत का भाग्य
सँवारा है।

बापू, तुमसे यह अंतिम विनय हमारी है—
यद्यपि इसका यह देग नहीं अधिकारी है—
करना न इसे वंचित अपने आशीषों से,
यह बुरा-भला
जैसा है, देश
तुम्हारा है।

५८

भाग्य था वे थे हमारे पथ-प्रदर्शक,
और कग्ने ही रहे वे यत्न भङ्गक,
हम न मोड़ें पाँव वे पहुँचे शिखर तक,

हम कदम

उनके कदम पर

धर न पाए।

हम चले वह चाल उनको लाज आई,
और हमने गलतियाँ पहचान पाईं,

किंतु पश्चात्ताप के आँसू मँजोकर

शोक हम

उनके हृदय का

हर न पाए।

वे नहीं बस एक भारतवर्ष के थे,
वे विधायक विश्व के उत्कर्ष के थे,

वे हमारे पास थे जग की धरोहर,

किंतु हम

उनकी हिफाजत

कर न पाए।

५६

पृथ्वी पर जितने देश, जाति औ' महापुरुष,
सब आज प्रकट करचे विषाद गांधी जी की
हत्या पर अतिशय करुण और अतिशय निर्दय
जिसने भारत-
इतिहास कलंकित
बना दिया।

कोषों में उनके थे जितने भी शब्द व्यक्त
रते सज्जनता, सहृदयता, शुचिता, मृदुता,
सबको निसार कर दिया उन्होंने बापू पर,
था स्थान उन्होंने
ऐसा जग में
बना लिया।

हम हत्यारे के जाति-धर्म वालों ने क्या
समझी महानता उस महानतम सत्ता की,
जलती मशाल के नीचे रहा अँधेरा ही
बाहरवालों ने उन्हें सिद्ध साधक समझा,
घर के जोगी
का हमने क्या
सम्मान किया।

६०

बापू के अवसान पर जब मन दुखित-उदास ,
धीरज देते हैं हमें बाबा तुलसीदास ।
'सुनहु भरत भावी प्रबल, विलखि कहेउ मुनिनाथ ,
हानि, लाभु, जीवनु, मरनु जसु अपजसु विधि हाथ ।

अस विचारि केहि दीजिअ दोषू ,
व्यरथ काहि पर कीजिअ रोषू ।'
बापू की हत्या का, भाई ,
संप्रदायपन उत्तरदायी ।
पर न उसे क्या दोष लगाएँ ,
नाथू को निष्पाप बताएँ ?

नाथू को पापी कहें अथवा हम निष्पाप ,
बापू के तन-त्याग पर मन में अति संताप ।
संप्रदायपन धर्म हो या अधर्म की मूल ,
बापू का हम शोक-दुख कैसे पाएँ भूल !

खादी के फूल

‘तात विचार करहु मन माहीं ,
सोचु जोग दसरथ नृप नाहीं ।’
बापू ने कब निज व्रत छोड़ा ,
सत्य-अहिंसा से मुँह मोड़ा ?
मानवता के रहे उपासक ,
वे अपनी अंतिम साँसों तक ।
‘सोचनीय नहिं कोसल राज ,
भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ
भयेउ, न अहै, न अब होनिहारा
भूप भरत जस पिता तुम्हारा ।’

भूप भरत को जो दिया गुरु वशिष्ठ ने ज्ञान,
भारत को करता वही अब सांत्वना प्रदान ।
सोचनीय बापू नहीं, सोचनीय हम लोग,
सिद्ध न अपने को सके कर हम उनके जोग ।

६१

जब तुम सजीव धरती पर चलते फिरते थे,
जब तुम अपनी निर्मल वाणी बिखराते थे,
तब तुमको हम वह इज्जत आदर दे न सके,
जिसके तुम थे
हे बापू, सच्चे
अधिकारी ।

लेकिन अब जब तुम दुनिया से कर कूच गए
हमको अपनी भारी ग़लती महसूस हुई,
मुख नहीं तुम्हारा गुण वर्णन करते थकता,
आँखें श्रद्धांजलि
देते हुए
नहीं थकतीं ।

खादी के फूल

बयों न हो हमारी उन्हीं कुपूतों में गिनती
जो कष्ट पिता को जीवन में पहुँचाते हैं,
लेकिन जब वह टिकठी के ऊपर चढ़ जाता,
तब बड़े-बड़े

पिंडे उसपर

लुढ़काते हैं ।

है कमी नहीं दुनिया में हँसनेवालों की,
हमने अपने कर्मों से मौका उन्हें दिया,
यह व्यंग वचन मेरे सुनने में आया है,
मौजूद पिता आँखों को नहीं मुहाता है,
मृत पिता आँसुओं
से नहलाया जाता है ।

जग में ऐसे भी आँसू की, उच्छ्वासों की
जो कीमत है, वापू, तुमने अवरेखी थी,
तुमने इन धुँधले-धुँधले चिन्हों में ही तो
मानव सुधार

की आशाएँ दृढ़

देखी थीं ।

६२

खोकर अग्ने हाथों से दौलत गांधी-सी,
तू आज खड़ी भारतमाता अपराधी-सी,
दृग द्रवित किए, सिर नमित किए, मुँह लटकाए,
छाती धक-धक,

भीगा मस्तक,

रग-रग सशंक ।

गांधी तेरे मुख-मंडल का था उजियाला,
गोडसे लगाकर, हाय, गया खाँचा काला,
अचरज होगा यदि तूण से पर्वत छिप जाण,
आभामय है

अब भी तेरा

आनन-मयंक ।

यदि अवसर यह लज्जा से शीश भुकाने का,
तो गर्वसहित ऊपर भी शीश उठाने का,
अवसाद घना उत्साह नया बनकर छाए,
बलि-गौरव में

छिप जाए हत्या

का कलंक ।

६३

वे आत्माजीवी थे काया से कहीं परे,
वे गोली खाकर और जी उठे, नहीं मरे,
जब से तन चढ़कर चिता हो गया राख-धूर,
तब से आत्मा

की ओर महत्ता

जना गए ।

उनके जीवन में था ऐसा जादू का रस,
कर लेते थे वे कोटि-कोटि को अपने बस,
उनका प्रभाव हो नहीं सकेगा कभी दूर,
जाते-जाते

बलि-रक्त-सुरा

वे छना गए ।

यह भूठ, कि, माता, तेरा आज सुहाग लुटा,
यह भूठ, कि तेरे माथे का सिंदूर छुटा,
अपने माणिक लोहू से तेरी माँग पूर
वे अचल सुहागिन

तुम्हे, अभागिन,

बना गए ।

६४

अज्ञान, अशिक्षित और अदीक्षित भारत में
जिसमें मजहब की अंधी श्रद्धा भर बाकी,
भासान बड़ा था उसका भंडा ऊँचा कर
लोगों को भरमाना

या पागल

कर देना ।

खादी के फूल

है धर्म नाम पर बेधर्मी की बात हुई,
हैं धर्म नाम पर बेधर्मी के काम हुए,
हैं धर्म नाम पर पाप कराए और किए
कितने, कितनों ने
केवल स्वार्थ
पुजाने को ।

है धर्म युद्ध में आना कोई खेल नहीं
उसकी तैयारी आत्म त्याग, तप, साधन है,
इसमें विजयी होने की कीमत गर्दन है,
जो आज सुखों के साज सजाते महलों में,
जो आज बधाई लूट रहे हैं जलसों में
वे धर्म आड़ में लड़नेवाले थे योद्धा,
वस धर्म-नाम पर
लड़नेवाले
तो तुम थे !

६५

है गांधी हिंदू जनता का दुग्धन भारी,
वह करना है तुम्हों की मदा तरफ़दारी,
उमका प्रभाव हिंदुत्व के लिए भयकारी,
यह बात घुमी

कुछ घूमे-उल्टे

माथों में।

हिंदुत्व दिव्यतम बापू जी में व्यक्त हुआ,
संसार उमीके कारण उनका भक्त हुआ,
हिंदू आदर्शों के ही रहकर अनुयायी
वे आज चमकते

विश्व जनों की

पाँतों में।

जिम्ने मानवता के हित इतना दुख भेला,
वह कर सकता था हिंदूपन की अवहेलना,
हिंदुत्व शब्द है मानवता का पर्यायी,
हिंदुत्व सुरक्षित

था बापू के

हाथों में।

६६

उसने खुद तृण-कुश-कंटक जाल चबाया,
लेकिन हमको छाती का क्षीर पिलाया,
दो लगा हमारे ही हित में मृत काया,
गौ के से गुण

थे उस माधव

मोहन में ।

था एक अहिंसा, दूजा मृत्यु किनारा,
बहती थी जिमके बीच प्रेम की धारा,
गांधी ने लाखों नागि-नरों को तारा,
बहती गंगा-सा

था वह जग-

आगत में ।

उमने तपमय कर्मों में उग्र बिताई,
मुँह मोड़ लिया जब फल की बेला आई,
उम वीतराग से ऋद्धि-मिद्धि शरमाई,
थी मूर्तिमान

गीता उसके

जीवन में ।

गौ-गंगा औ' गीता की याद दिलाता,
वह चला गया इस दुनिया से मुमकाता,
हिंदूपन का जो शत्रु उसे बतलाता,
कुछ पाप छिपा

है उसके

हिंदूपन में ।

६७

हिंदू-जनता को रहा सदा वह धर्म-प्राण,
मुस्लिम जब समझे, निकला सच्चा मुसल्मान,
ईसाई को था भू पर ईसा का प्रमाण,
पारसी, जैन, सिख, बौद्धों को था प्रिय समान,
वह संत सभी

की पूजा का

अधिकारी था ।

जीवन भर रक्खी उसने अपनी आन एक—
हिंदू-मुस्लिम-ईसाई—सब में प्राण एक,
है छिपा हुआ सब के अंदर इंसान एक,
है बसा हुआ सब के भीतर भगवान एक,
वह मानवता-

मंदिर का एक

पुजारी था।

थी आँख तैरती दुनिया की ऊपर-ऊपर,
वह भेद विभेदों को पैठा, पहुँचा भीतर,
उसने ऊपर उठ कहा, किया, औ' दिखलाया,
बेमानी कौमों, देशों, धर्मों के अंतर,
वह सौ विरोध

के बीच

समन्वयकारी था।

६८

जब लाखों, कर्मों से पशु को शरमाते थे,
बस एक दूसरे को दोषी ठहराते थे,
खुशकिस्मत थे, निष्पक्ष एक तो हम में था,
नाथू आकर के

भाग्य हमारा

कूट गया।

इस दुनिया में हर एक वस्तु की सीमा है,
फिरक़ेबंदी का जोर आजकल धीमा है,
उस नभ-ऊँची सत्ता पर हाथ उठाने में,
जैसे उमका

सारा बल-विक्रम

टूट गया।

यह संप्रदायपन एक बड़ा गुब्बारा था,
उसने अपने को इम गति से विस्तारा था,
उससे ढक जानेवाला था संपूर्ण हिंद,
बापू के प्राणों

को छूकर वह

फूट गया।

६६

उसके बेटे दोनों थे हिंदू-मुसल्मान
वह बना रहा था हिंदू को तप-त्यागप्राण
मुस्लिम के पथ में विछा रहा था आत्मदान
गिरता न एक

इससे, दूजा

बनता महान ।

उसको प्रिय थे दोनों भगवन् गीता, कुरान,
दोनों को देना था अपनी श्रद्धा समान,
पाना था दोनों में प्रभु-वाणी का प्रमाण,
दो भिन्न सुरों

से गाता था

वह एक गान ।

उस धवल कमल को तुमने समझा तक्षक था,
पालक था, जिसको तुमने समझा भक्षक था,
वह दुश्मन नंबर एक तुम्हारा रक्षक था,
धीरे-धीरे

तुमको होगा

यह भासमान ।

७०

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान ।

हिंदू-मुस्लिम गत्रु परस्पर,
हुए धर्म का लेकर नाम,
बापू ने दोनों को बिठला माथ कराया यह जुनि गान—
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान ।

ईश्वर की अल्ला की पूजा
दोनों की दोनों बेकाम,
भूल अगर हम जाएँ इसके कारण रह सकना इमान ।
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान ।

बापू तो अब अंतर्धान,
छोड़ा है जो काम उन्होंने
उसको हम सब दें अंजाम,
बापू के मुख से निकले इस महामंत्र को करें प्रमाण ।
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान ।

७१

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान ।

सरि-संगम, बन-गिरि-आश्रम से
ऋषियों ने जो कहा पुकार,
आज उसीको दुहराना है यह भंगी बस्ती का संत,
... .एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति !

ईश्वर-अल्ला-एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान ।

खादी के फूल

आदि काल से सायं-प्रातः
आर्य जाति ने हाथ पसार
जिसको माँगा, वही माँगता यह तंगा साधू अवदात,
...धियो योनः प्रचोदयात् !

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान ।

वह था ऐसा हृदय उदार
भेद पराए औ' अपने का
उसे सदा था अस्वीकार,
एक मुल्क ही, एक खल्क ही समझा वह जीवन पर्यंत,
...सर्वे भद्राणि पश्यंतु

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान ।

७२

एक हज़ार बरस की जिसने
कर दी दूर गुलामी,
उस नेताओं के नेता को
एक हज़ार सलामी ,

किया योग्य उसने अयोग्य को
यौगिक शक्ति जगा के ।

आपस में कटते-मरते थे
भूले देश भलाई,
सिखलाया उसने हैं हिंदू-
मुस्लिम भाई-भाई ,

मंत्र मुहब्बत का दोनों के
कानों में बिठला के।

हिंदू करते थे सदियों से
जिनकी क्रूर अवज्ञा,
उन्हीं अछूतों को दी उसने
हरिजन की शुभ संज्ञा ,

किए अपावन उसने पावन
दृग-जल से नहला के।

भुका धरा का सारा वैभव
उसके तप के आगे,
दान दिया जिसने अपने को
वह जग से क्या माँगे ,

धन्य हुआ वह मानव के हित
तन-मन-प्राण लगा के।

उसने अपने जीवन में वह
विशद साधना साधी,
जगती के भाग्योदय का है
नाम दूसरा गांधी ,

शांति विश्व पाएगा केवल
उसका पथ अपना के

भारतीय जीवन का सबसे
उज्ज्वल रूप दिखा के,
भारतीय संस्कृति का सबसे
व्यापक अर्थ बता के ,

साथ हुआ गांधी गायत्री,
गीता, गौ, गंगा के।

७३

नरसी मेहता का गीत रेडियो गाता है,
जो वैष्णव जन के गुण लक्षण बतलाता है,
पद-पद पर चित्र तुम्हारा आगे आता है,
जैसे कवि ने

यह लिखा तुम्हें ही

रख मन में।

तुमने ही पीर पराई अपनी-सी जानी,
पर दुख उपकारी रहकर भी निर अभिमानी,
निश्चल रक्खा तन-मन, निश्चल रक्खी वाणी,
पर श्री, पर स्त्री

पैठी न तुम्हारे

लोचन में ।

निंदा न किसी की भी की, नित साधू बंदे,
काटे तुमने पग-पग पर तृष्णा के फंदे,
मिथ्या से मुख, विषयों से चित न किए गंदे,
क्षण भर न रहे

तुम क्रोध-कपट के

शासन में ।

तुम राम नाम के अनुरागी निकले अनन्य,
कब तुम्हें छू सके दुर्गुण, माया, मोह-जन्य,
हो गई तुम्हारी जगती तुमसे धन्य-धन्य,
तुम मूर्तिमान

बन गए गान वह

जीवन में ।

७४

गांधी को हत्यारे ने हमसे छीन लिया,
भारत ही क्या, पृथ्वी भर को श्री हीन किया
भारत ही क्या पृथ्वी भर को ग़मगीन किया,
आओ, हम उनको

अब दिल में

थापित कर लें।

आचार्य नबी कितने इस दुनिया में आए,
आदर्श जगत ने कितने उनके अपनाए,
इसके पहले गांधी को भी जग बिसराए,
आओ, हम उनके

मूल तत्त्व

संचित कर लें।

रज की विनम्रता से रचकर हम उनका तन,
रखकर उसके अंदर मानवता का मृदु मन,
दें उसको सत्य-अहिंसा का श्वासस्पंदन,
आओ, हम बापू

को फिर से

जीवित कर लें।

७५

हिंसा जो उसको चाल रूचे चल सकती है,
पशु बल से अब वह मानव को छल सकती है,
उनको काबू में रखनेवाला दूर हुआ,
उठ गई अहिंसा

आज धरा के

आँगन से।

निर्भय होकर अब चल न सकेगी अच्छाई,
सब काल रहेगी सुंदरता अब शरमाई,
भूडेपन को अब मात करेगी सच्चाई,
ढक अपना मुँह

लफ़ाजी के

अवगुंठन स।

संसार-जमाना कितना ही पछताएगा,
लेकिन अब जल्दी शरुस न ऐमा आएगा
जो पाजी को दे अपने दिल के साथ दुआ,
लेकिन अविरत

लड़ता जाए

पाजीपन से।

७६

अपने ईश्वर पर उसको बड़ा भरोसा था,
सपने में भी उसने न किसी को कोसा था,
दुश्मनी करे कोई या उसका दोस्त बने,
दुनिया में उसको
नहीं किसी से
गिला रहा।

पिछले कुछ वर्षों में कितना कीचड़ उछला
हो गया कलंकित कितनों का मुखड़ा उजला,
पर कभी न उसमें उसके निर्मल अंग सने,
वह तम-कर्म
पर ज्वलित कमल सा
खिला रहा ।

हम आज़ादी के पास पहुँच ज्योंही पाए,
फिरकेबंदी के वह भीषण भोंके आए,
हम नौजवान भी उससे भागे, घबराए,
पर जेर उसे सारी ताकत से करने में
अपनी अंतिम
साँसों तक बूढ़ा
पिला रहा ।

जो काम अधूरा उसने अपना छोड़ा था,
जिममें हमने ही अटकाया रोड़ा था
(पूरे होकर ही छूटे उसके काम ठने)
हमको उसकी
सुधि बार-बार
है दिला रहा ।

७७

जिस दुनिया में भौतिकता पूजी जाती थी,
अपने बल, अपने वैभव पर इतराती थी,
उसमें तुमने केवल खाली हाथों आकर
आत्मिक गौरव-
गरिमा को फिर से
थाप दिया ।

जिस दुनिया में पशुता की मची दुहाई थी,
दानवता की ही ओर सयत्न चढ़ाई थी,
उसको तुमने अपने चरित्र की ताकत पर
स्वर्गिक शृंगों पर
चढ़ने का
संकेत किया ।

जो दुनिया थी शंका-संदेहों से धुँधली,
उसमें तुम लाए श्रद्धा की आभा उजली,
इस नास्तिकता के, अविश्वास के युग में भी
जो नहीं तुम्हारी पलकों से पल मात्र टली,
इसका कि मनुज में ही होता विकसित ईश्वर
पवका सबूत
अपने को तुमन
बना लिया।

तुम चले गए, क्या भौतिकता फिर छाएगी ?
क्या पशुता फिर अपना साम्राज्य बढ़ाएगी ?
मानवता फिर दानवता में खो जाएगी ?
क्या ज्योति नहीं अब और जगत में आएगी ?
इन प्रश्नों से
मंथित है मेरा
आज हिया।

७८

थी राजनीति क्या, छल-बल सिद्ध अखाड़ा था,
गांधी जी ने उसमें घुसकर हुंकारा था—
मैं सत्य-अहिंसा से मुँह कभी न मोड़ूँगा,
मैं मार्ग और

मंजिल को एक

बनाऊँगा।

ऊँची से ऊँची मंजिल पर आँखें दृढ़ कर
मैं जाऊँगा उस तक चलकर ऊँचे पथ पर,
नीचे पथ से ऊँची मंजिल गिर जाती है,
मैं पाथ न ऐसा

सिर लूँगा,

मिट जाऊँगा।

भारत-आज़ादी प्यारी प्राणों से बढ़कर,
उमपर मेरा रोयाँ-रोयाँ है न्योछावर
लेकिन तुम लाओ उसको गंदे हाथों से,
मैं उसको

अपने पैरों से

ठुकराऊँगा।

७९

वे कहते थे, दुश्मन को बस वह जीत सका,
जो प्रेम-मुहब्बत से कर उसको भीत सका,
औ' प्रेम-मुहब्बत की है खास कसौटी क्या ?
उसको छूकर

सब क्रोध-घृणा-

कटुता भागे ।

वे कटक पथ में फूल बिछाते चले गए,
अपने दुश्मन की भूल बताते चले गए,
सब को अपने अनुकूल बनाते चले गए,
आदर्श अहिंसा

और सत्य के

बे-त्यागे ।

मूज़ी को भी वे दोस्त बनाकर ही माने,
वया हुआ किसी पागल ने मारा अनजाने,
मुस्लिम, अंग्रेज़ विरोधी थे सबसे ज्यादा,
वे आज प्रशंसा

में उनकी

सबसे आगे ।

८०

बापू के मरने पर यह शब्द जिना के थे,
गांधी निःसंशय उन महान पुरुषों में थे,
जिनको था हिंदू संप्रदाय ने जन्म दिया
औ' रहे सदा

हिंदू ही उनके

अनुयायी ।

ओ जिना, सदा तुम कड़वी बात रहे कहते,
हम तो अब इनके आदी हैं सहते-सहते,
दुख और लाज से आज हमारा दबा हिया,
दुनिया परखेगी

इन जुमलों की

सच्चाई ।

सब सभ्य जगत ने उनके गुण को पहचाना,
युग महापुरुष पदवी से उनको सन्माना,
भावी मानवता का उनको प्रतिनिधि जाना,
तुम लाँघ न पाए

फिरकेबंदी की

खाई ।

८१

यह सच है, नाथू ने बापू जी को मारा,
क्या इतने ही से जीत गया है हत्यारा,
क्या गांधी जी थे छिति, जल, पावक, गगन, पवन ?
वे अगर यही थे
तो भी हत्यारा
हारा ।

छिति में है उनकी क्षमाशीलता, धृति बाकी,
जल है उनके मन की कोमलता का साखी,
पावक उनकी पावनता का करता वर्णन,
जिसमें तपकर
निखरा उनका
जीवन कंचन ।

है व्यक्त गगन से उनके कद की ऊँचाई,
है व्यक्त गगन से उनके दिल की चौड़ाई,
है उनका ही मंदिर-मंदिर, आँगन-आँगन
संदेश प्रचारित
मुक्त समीरण
के द्वारा ।

८२

उसने अपना सिद्धांत न बदला मात्र लेश,
पलटा शासन, कट गई कौम, बँट गया देश,
वह एक शिला थी निष्ठा की ऐसी अविचल,
सातों सागर

का बल जिसको

दहला न सका

छा गया क्षितिज तक अंधक अंधड़-अंधकार,
नक्षत्र, चाँद, सूरज ने भी ली मान हार,
वह दीपजिवा थी, एक ऊर्ध्व ऐसी अविचल,
उंचास पवन

का वेग जिसे

विठला न सका

पापों की ऐसी चली धार दुर्दम, दुर्धर,
हो गए मलिन निर्मल से निर्मल नद-निर्भर,
वह शुद्ध छीर का ऐगा था सुस्थिर सीकर,
जिसको काँजी

का सिंधु कभी

बिलगा न सका

८३

तुम गए, भाग्य ही हमने समझा अस्त हुआ,
वह चिता-धूम के तिमिर तोम में अस्त हुआ,
ऐसे ग़म में पागल मनुष्य हो जाता है,
कुछ सच होता
है, कुछ को सच

बतलाता है ।

सच तो यह है, तुम थे ज़मीन पर कभी नहीं,
तुम नभ में थे, थी छाया से अभिषिक्त मही,
छाया विलुप्त हो गई, मगर तुम कहाँ हटे,
तुम भारत के
सौभाग्य क्षितिज पर

अडिग डटे ।

तुम चमक रहे हो अब भी अंबर के ऊपर,
तुम ध्रुव तारा हो जिसकी आभा अविनश्वर,
तुम अभी जगत को सदियों राह दिखाओगे,
तुम भावी की
नौका को पार

लगाओगे ।

८४

बापू-बापू कहना तुमको है बहुत सरल,
कुछ कहने में लगता है जिह्वा का चंचल,
अपने को बेटा साबित करना है मुश्किल,
बेटे भी कितने

बापों को दे

दगा गए ।

तुमने हमको जाना उन्मादी-उत्पाती,
फिर भी हमको ही सौंप गए अपनी थाती,
देखो हम उनको उज्ज्वल कितना रखते हैं,
आदर्श हमारे

मन में जो तुम

जगा गए ।

दे गए वसीयतनामा अपना तुम हमको—
कुछ और नहीं, यह एक चुनौती है तमको—
हम नहीं बदल सकते हैं उसका अक्षर भर,
तुम इसपर अपनी

मुहर लहू की

लगा गए ।

८५

बापू था ऐसा वातावरण विषावत बना,
जो तुम अमृतमय बातें हमें बताते थे,
वे अप्रिय थीं हो गईं हमारे कानों को,
लगता था तुम
बे ठीक राह
बतलाते हो ।

तुम अपने पथ के थे इतने दृढ़ विश्वासी,
तुम एक तरफ ही हाथ दिखाते सदा रहे,
दुनिया की दुनिया चली दूसरी ओर मगर
तुम एक सत्य
की सतत लगाते
सदा रहे ।

खादी के फूल

जब नहीं आज तुम रहे राह दिखलाने को,
तब प्रकट कि जो तुम थे कहते, था ठीक वही,
जिसपर तुम अपने पद-चिन्हों को छोड़ गए,
आनेवाली

दुनिया की सीधी

लीक वही ।

हमने विरोध जब किया तुम्हारा था तब भी
अंतरगत ने तुमको ही मचा माना था,
जितना हमने अपने को था जाना, समझा,
उगसे ज्यादा

तुमने हमको

पहचाना था ।

तुम सत्य-अहिंसा के मत से कैसे हटते,
दृढ़ बीज आदि से इनका या मन में बोया,
हम चकित, कृतज्ञ, तुम्हारे आगे नत इसपर—
हममें भी जो

विश्वास न था

तुमने खोया ।

८६

बापू तुमसे जो सत्य प्रवाहित होते थे,
उनके हम लोगों के अंतर तक आने में,
ऐसा लगता है, कारण प्रकट नहीं होता,
जैसे यह देह
तुम्हारी देनी
बाधा थी ।

जिस दिन मे वह जड़ होकर, जलकर धार हुई,
उन बातों की सच्चाई ही है नहीं खुली,
दिल की तह से आवाजें उठकर कहती हैं,
हमको मुद्दत से
उनपर बड़ा
अक्कीदा था ।

मेरे मन में उठता सवाल है रह-रहकर
पाता जवाब हूँ इसका ढूँढे कहीं नहीं,
मुझको अपने को ठीक समझने की कीमत,
क्यों तुमको देनी
पड़ी जिगर के
लोह से ?

८७

जब गांधी जी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को
मानव की पशुता से, दानवता से लड़ने,
तब देवों ने था उनको यह आदेश किया,
लो देह भीम की,

बल-विक्रम

बजरंगी का

लो भुजा विष्णु की चार, एक में गदा धरो,
करवाल एक में और एक में खर त्रिशूल,
औं चक्र सुदर्शन एक हाथ की उँगली पर,
पशुता-दानवता

से लड़ना है

महा कठिन

गांधी जी अपने प्रभु के आगे हो नत शिर
बोले थे मुझको दो तन दुर्बल मानव का,
लेकिन मुझमें सुर दुर्लभ आत्मा का बल दो,
आक्रमण मुझे करना है उस अंतर-गढ़ पर,
जो मूल प्रेरणा है पशुता-दानवता की;
कह 'एवमस्तु' उनको था प्रभु ने विदा किया ।

६८

भूले से भी तुमने यह दावा नहीं किया
लेकिन अपने कामों से सबको दिखा दिया—

उल्टा अपने को कण-तिनके सा लघु समझा—

बापू, तुम थे

सच्चे अर्थों में

पैगंबर ।

था ,सत्य, अहिंसा' शब्द जगत ने जान लिया
पर उनके अर्थों का था कितना मान किया

तुमने ही की उनकी विदग्ध, व्यापक व्याख्या,
की सिद्ध सफलता

उनकी, उनपर

चल, जलकर ।

हम देख नहीं पाते हैं दुनिया के आगे
हम मृग-तृष्णा की ओर चले जाते भागे
सब ऊँचे आदर्शों-उद्देश्यों को त्यागे,

तुम एक शहादत

थे बहिस्त की

धरती पर ।

१२९

८६

जब कि भारत भूमि थी भीषण तिमिर में आवृता,
जब कि अपनी शक्ति का भी था नहीं हमको पता
तब कहा तुमने कि है परतंत्रता भारी ख़ता,
और मार्ग स्वतंत्रता का भी दिया सीधा बता,
देव, थे उस कोटि के तुम, थे कि जिसके कृष्ण-राम,
चल दिए संसार भर को शक्तियाँ अपनी जता ।
अवतरित हो व्यक्त की तुमने असीम उदारता,

यदा यदाहि धर्मस्य

लानिर्भवति भारत,

अभ्युत्थानमर्धस्य

तदात्मानं सृजाम्यहम् ।

पर गए तुम काम तो होने न पाया था ख़तम ।

आज है तम तोम में डूबी हुई दुनिया तमाम,

परित्राणाय साधूनां

विनाशाय च दुष्कृताम्,

धर्म संस्थापनार्थाय

संभवामि युगे युगे ।

याद कर यह पैज अनुपम ज्योति आशा की जगे ।

६०

जब स्वर्ग लोक सें पहुँचे बापू तन तजकर
भगवान बुद्ध, ईसादिक पावन पैगंबर—
सब आए उनके पास पूछने को सत्वर,
आदर्शों का जो दीप जलाया था हमने
क्या तुमने उसको
उसी तरह

जलता पाया ?

१३१

खादी के फूल

बापू बोले, आदर्शों की वह दीप-शिखा
जो आप सबों के तप से जागी थी भू पर,
ले चुके परीक्षा हें उसकी उंचास पवन,
वह क्षीणकाय

होकर भी है

तम के ऊपर ।

लेकिन उसकी संजीवन शक्ति बढ़ाने को
मानव देता है उसको अपना स्नेह नहीं,
वह नहीं समझता स्नेह निकलता अंतर से
बरसा सकते

उसको अंबर से

मेघ नहीं ।

जीवन भर अपना हृदय गला उसमें भरता
मैं रहा दीप वह अधिकाधिक जाग्रत करता,
जब लगा वहाँ से चलने अपना स्नेह-रक्त
आदर्शों के

उस दीवे में

भरता आया ।

६१

था उचित कि गांधी जी की निर्मम हत्या पर
तारे छिप जाते, काला हो जाता अंबर,
केवल कलंक अवशिष्ट चंद्रमा रह जाता,
कुछ और नजारा

था जब ऊपर

गई नज़र।

१३३

खादी के फूल

अंबर में एक प्रतीक्षा का कौतूहल था,
तारों का आनन पहले से भी उज्ज्वल था,
वे पंथ किसी का जैसे ज्योतित करते हों,
नभ वात किसीके
स्वागत में
चिर चंचल था ।

उस महाशोक में भी मन में अभिमान हुआ,
धरती के ऊपर कुछ ऐसा वलिदान हुआ,
प्रतिफलित हुआ धरणी के तप से कुछ ऐसा,
जिसका अमरों
के आँगन में
सम्मान हुआ ।

अवनी गौरव से अंकित हों नभ के लेखे,
क्या लिए देवताओं ने ही यश के ठेके,
अवतार स्वर्ग का ही पृथ्वी ने जाना है,
पृथ्वी का अभ्युत्थान
स्वर्ग भी तो
देखे !

६२

दस लाख जनों के जिसके शव पर फूल चढ़े,
दस लाख लोग जिसकी अर्थी के साथ चले,
दस लाख मुखों से जिसकी जय-जयकार हुई ।

वह मरा हुआ
भी लाखों जिंदों
का नेता ।

जिसके मरने पर सारी दुनिया चीख उठी,
जिसके मरने पर सारे जग ने आह भरी,
सारे जहान की आँखों से आँसू निकले,
वह मरकर भी
अगणित हृदयों में
अमर हुआ ।

जिसके मरने पर देश-देश ने यह समझा,
असे उसने कोई अपना मुखिया खोया,
जिसके मरने पर क़ौम-क़ौम की भुकी ध्वजा
मातम करने को व्यक्त, समादर देने को,
उससे देवों
को ईर्ष्या क्या न
हुई होगी !

६३

ऐसा भी कोई जीवन का मैदान कहीं
जिसने पाया कुछ बापू से वरदान नहीं ?
मानव के हित जो कुछ भी रखता था माने
बापू ने सबको
गिन-गिनकर
अवगाह लिया ।

बापू की छाती की हर साँस तपस्या थी,
आती-जाती हल करती एक समस्या थी,
पल बिना दिए कुछ भेद कहीं पाया जाने,
बापू ने जीवन
के क्षण-क्षण को
थाह लिया ।

किसके मरने पर जग भर को पछताव हुआ ?
किसके मरने पर इतना हृदय मथाव हुआ ?
किसके मरने का इतना अधिक प्रभाव हुआ ?
बनियापन अपना सिद्ध किया सोलह आने,
जीने की कीमत कर वसूल पाई-पाई,
मरने का भी
बापू ने मूल्य
उगाह लिया ।

६४

तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर,
 बोले, वह साथ चले जो अपना दाहे घर,
 तुमने था अपना पहले भस्मीभूत किया,
 फिर ऐसा नेता
 देश कभी क्या
 पाएगा ?

फिर तुमने अपने हाथों से ही अपना
 कर अलग देह से रक्खा उसको धरती पर,
 फिर उसके ऊपर तुमने अपना पाँव दिया,
 यह कठिन साधना देख कँपे धरती-अंबर,
 है कोई जो
 फिर ऐसी राह
 बनाएगा ?

इस कठिन पंथ पर चलना था आसान नहीं,
 हम चले तुम्हारे साथ, कभी अभिमान नहीं,
 था, बापू, तुमने हमें गोद में उठा लिया,
 यह आनेवाला
 दिन सबको
 बतलाएगा ।

६५

गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा,
तुम-सा सदियों के बाद कहीं फिर पाएगा,
पर जिन आदर्शों को लेकर तुम जिए-मरे,
कितना उनको

कल का भारत

अपनाएगा ?

बाएँ था सागर औ' दाएँ था दावानल,
तुम चले बीच दोनों के, साधक, सम्हल-सम्हल,
तुम खड्गधार-सा पथ प्रेम का छोड़ गए,
लेकिन उसपर

पावों को कौन

बढ़ाएगा ?

जो पहन चुनौती पशुता को दी थी तुमने,
जो पहन दनुजता से कुश्ती ली थी तुमने,
तुम मानवता का महा कवच तो छोड़ गए,
लेकिन उसके

बोभे को कौन

उठाएगा ?

शासन-सम्राट डरे जिसकी टंकारों से,
घबराईं फिरकेवारी जिसके वारों से,
तुम सत्य-अहिंसा का अजगव तो छोड़ गए,
लेकिन उसपर

प्रत्यंचा कौन

चढ़ाएगा ?

६६

बलिदानी तो अपने प्राणों से जाता है
फल होता क्या, वह नहीं देखने आता है,
बापू के सिर से दूर हुई जिम्मेदारी,
बोझा आया
अब हम सबके
सिर पर भारी।

वे जैसा कहते थे यदि हम वैसा करते
तो क्यों वे सीने पर गोली खाकर मरते,
उनके जीते तो बात न हम उनकी माने,
मरने पर ही,
आओ, हम उनको
पहचानें।

जो शांति न हम उनको जीवन में दे पाए,
आओ, हम उनकी आत्मा को ही पहुँचाएँ,
इसका कुछ उनके निकट भले ही अर्थ न हो,
लेकिन हमको कुछ ऐसा करना है जिससे,
बलिदान हमारे
बापू जी का
व्यर्थ न हो।

६७

ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से
ओ देशवासियो रोओ मत यों निर्भर से,
दरख़्वास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से,
वह सुनता है

ग़मज़दों और

रंजीदों की

जब सार सरकता-सा लगता जग-जीवन से,
अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से—
हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से
दुनिया ऊँचे

आदर्शों की,

उम्मीदों की ।

साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे—
यह भूमि बुद्ध-बापू-से सुत की जनी रहे
प्रार्थना एक, युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे
यह जाति

योगियों, संतों

और शहीदों की ।

६८

भारत माता की युग-युग उर्वर धरती पर
सब जग वंदित बापू की छाती का शुचित्र
जो रक्त गिरा है रक्त-बीज वह बन जाए,
भारत माता

गांधी से बेटे

उपजाए !

यह संत, सिद्ध, सूरमा जन्माती आई है,
समयानुकूल इसने विभूति बिखराई है,
यह परंपरा अपनी प्रसिद्ध क्या बदलेगी,
यह भावी के

नेताओं को भी

उगलेगी ।

उर्वरता, देखो, इस पृथ्वी की घटे नहीं,
इस परंपरा का बिरवा सूख, कटे नहीं,
दुनिया बैठेगी एक दिवस इसके नीचे,
आओ, इसको

सब रक्त-पसीने

से सींचें ।

६६

उनके प्रभाव स हृदय-हृदय था अनुरंजित,
फिर भी वे थे काया-बंधन से परिसीमित,
दिल्ली में थे तो था उनसे वर्वा वंचित,
कातिल से उनका वध न हुआ, बंधन टूटा,
अब वे विमुक्त
हो आज कहाँ

मौजूद नहीं ।

खादी के फूलें

हम खोए थे उनके वस्त्रों-व्यवहारों में,
हम खोए थे उनके मुट्ठी भर हाड़ों में,
उनकी तकली, उनके चर्खे के तारों में
उनके प्रति अब ऊपर का आकर्षण छूटा,
अब समझेगी

उनके मन का

मंतव्य मही ।

जिस जगह मनुज सच्चाई पर अड़ जाएगा,
जिस जगह मनुज आत्मा को नहीं भुकाएगा,
गिर जाएगा पर कभी न हाथ उठाएगा,
अपने हत्यारे की भी कुशल मनाएगा,
हो जाएँगे

गांधी बाबा

बस प्रकट वहीं ।

१००

आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण तुमाइश मे
हैं आज दिखावे पर मानवता की किस्में,
है भरा हुआ आँखों में कौतूहल-विस्मय,
देखें इनमें

कहलाया जाता

कौन मीर ?

१४५

खादी के फूल

दुनिया के तानाशाहों का सर्वोच्च शिखर,
यह फ्रैंको, टोजो, मसोलिनी पर हर हिटलर,
यह रूजवेल्ट, यह ट्रूमन, जिसकी चेष्टा पर
हीरोशीमा, नागासाकी पर ढहा कहर,
यह है चियांग, जापान गर्व को मर्दित कर
जो अर्द्ध चीन के साथ आज करता संगर,
यह भीमकाय चर्चिल है जिसको लगी फिकर,
इंगलिस्तानी साम्राज्य रहा है बिगड़-बिखर,
यह अफ्रीका का स्मट्स खबर है जिसे नहीं,
क्या होता, गोरे-काले चमड़े के अंदर,
यह स्टलिनग्राड

का स्टलिन लौह का

ठोस वीर ।

जग के इस महाप्रदर्शन में नम्रता सहित
संपूर्ण सभ्यता भारतीय सारी संस्कृति
के युग-युग की साधना-तपस्या की परिणति,
हम में जो कुछ सर्वोत्तम है उसका प्रतिनिधि—

हम लाए हैं

अपना बूढ़ा,

नंगा फकीर ।

१०१

बापू के वलिदानी शव पर
नेता, लायक,
जन के नायक,
लेखक, गायक

बहा-बहाकर अपने आँसू,
दे श्रद्धांजलि
चले गए हैं,
दुनिया में हैं काम और भी तो करने को

बापू के वलिदानी शव पर

एक आह पर,

एक अश्रु पर,

एक मगर स्वर

थमी नहीं है,

सूख न पाया,

चुग न सका हो,

यह किसका स्वर, किसका आँसू, किसकी आँहें ?

बापू के वलिदानी शव पर

सिसक-सिसककर

बिलख-बिलखकर

कौन गलाती

अपना अंतर ?

यह भारत की

आत्मा शाश्वत,

हा मर्माहत,

रघुपति, राघव, राजा राम इसे दो धीरज

१०२

हम गांधी की प्रतिभा के इतने पास खड़े
हम देख नहीं पाते सत्ता उनकी महान,
उनकी आभा से आँखें होतीं चकाचौंध,
गुण-वर्णन में

साबित होती

गूँगी ज़बान ।

वे भावी मानवता के हैं आदर्श एक,
असमर्थ समझने में है उनको वर्तमान,
वर्ना सच्चाई और अहिंसा की प्रतिमा,
यह जाती दुनिया

से होकर

लोह लुहान !

खादी के फूल

जो सत्यं, शिव, शुभ, सुंदर, शुचितर होता है
दुनिया रहती है उसके प्रति अंधी अजान,
वह उसे देखती, उसके प्रति नतशिर होती
जब कोई कवि

करता उसको

आँखें प्रदान

जिन आँखों से तुलसी ने राघव को देखा
जिम अंतर्दृग से सूरदाम ने कान्हा को,
कोई भविष्य कवि गाँगी को भी देखेगा,
दर्शाएगा भी

उनकी सत्ता

दुनिया को ।

भारत का गांधी व्यक्त नहीं तब तक होगा
भारती नहीं जब तक देती गांधी अपना,
जब वाणी का मेधावी कोई उतरेगा,
तब उतरेगा

पृथ्वी पर गांधी

का सपना ।

जायसी, कबीरा, मूरदास, मीरा, तुलसी,
मैथिली, निराला, पंत, प्रसाद, महादेवी,
ग़ालिबेमीर, दर्दोन्ज़ीर, हली, अकबर,
इक़बाल, जोश, चकब्रस्त, फिराक़, जिगर, गागर

की भाषा निश्चय वरद पुत्र उपजाएगी
जिसके तप तेजस्वी-ओजस्वी वचनों में
मेरी भविष्य

वाणी सचची

हो जाएगी।

१०३

बापू की पावन छाती से जो खून बहा,
यह गलत, उसे कपड़े-मिट्टी ने सोख लिया,
जड़ मिट्टी-कपड़े में है इतनी शक्ति कहाँ,
बापू का तेजस-

पुंज रक्त

बर्दाश्त करे !

वह बापू के सीने से बाहर आते ही
अति प्रबल, क्षिप्र विद्युत्-धारा में परिवर्तित
हो, पैठ गया हर भारतवासी के तन में,
कोई जिसकी

रग में उनका

रक्त नहीं !

मैं सोच रहा था अब तक बात मनुष्यों की,
मेरी काली सतरों में लाली-सी भलकी,
क्या आज लेखनी को भी मेरी कलुष-मुखी
बापू के कण भर

लोहू का

वरदान मिला !

१०४

उस परम हंस के घायल होकर गिरते ही
शत-शत कलमों-कंठों से बरबस निकल-निकल
शत-शत प्रबंध, कविताओं ने नभ गूँज दिया,
जैसे सहसा

चीत्कार कर उठी

सरस्वती ।

१५३

में एक-एक लेखक के प्रति आभारी हूँ,
में एक-एक कवि के प्रति हूँ साभार भुका,
जिसकी रोई लेखनी निधन पर बापू के,
जिसका क्रंदन
स्वर-शब्दों में
साकार हुआ।

अपने कवित्व या जोड़-जोड़ अक्षर धरने
की क्षमता का भी आज ऋणी हूँ मैं भारी,
मेरे दुख-सुख में काम सदा वह आई है,
पर कभी नहीं
इतनी जितनी
इस अवसर पर।

यदि वाणी का आधार न मुझको मिल पाता,
तब महाशोक, वेदना, व्यथा के सागर से,
तब महापाप, अनुताप, शाप की भँवरों से,
जिसमें इस घटना ने था मुझे ढकेल दिया,
मैं समझ नहीं
पाता कैसे
ऊपर आता।

१०५

तुम महा साधना, जग कुवासना में विलीन,
तुम महा तपस्या, जग छल-छिद्रों से मलीन,
तुम महा मुक्त, जग सौ-सौ बंधन के अधीन,
वह रहा तुम्हारी

सत्ता से सब दिन

अजान ।

तुम महा व्रती, कब सके कर्म का पिंड छोड़,
तुम महा यती, कब सके फलों से चित्त जोड़,
था महा कृती जब मिली तुम्हारी कृपा कोर,
अब जगा पाप,

कर गए विश्व से तुम

प्रयाण ।

तुम महाप्राण, मैं लघु-लघु साँसों में सीमित,
तुम महामनुज, मैं कुटुंब-कबीले तक परिमित,
तुम महाकाव्य के महोदात्त नायक निश्चित,
मैं करूँ गीत से

कैसे श्रद्धांजलि

प्रदान ।

१०६

यह समय नहीं है गाने, गान सुनाने का,
यह शोक-शर्म से अपना शीश भुकाने का,
पर, हाय कलेजा फटता है चुप रहने से,
इस विषम घड़ी

में जी कैसे

धीरज पाए ।

कितने ही उनकी सुना रहे हैं गुण-गाथा,
कुछ कहे बिना मुझसे भी नहीं रहा जाता,
उनमें मेरे भी टूटे-फूटे छंद मिलें,
बापू के प्रति

जो गीत जा रहे

हैं गाए ।

श्रद्धांजलि उनके चरणों में मैं क्या दूँगा,
इसको ही अपनी घरम सफलता समझूँगा,
यदि मेरे अस्फुट शब्द, विचारों, भावों में
कुछ ठेस-क्लेश

भारत का, वाणी

पा जाए ।

१०७

वन गमन समय मुनियों का वेश बनाए,
जब सीतापति गंगा तट पर थे आए,
केवट ने उनको थे यह वचन सुनाए—

‘हैं एक तरह के हम दोनों व्यवसायी,

तुम भवसागर,

मैं सरि से

पार लगाता ।’

खादी के फूल

थे कहीं राम-भगवान, कहीं था केवट,
था भक्ति-भावना से ऊभा-चूभा घट,
निकले थे बैना प्रेम-लपेटे अटपट,

(शब्दों ने नापी कब दिल की गहराई?)

मैं उसी मनस्थिति

में अपने को

पाता।

बापू तुमने बीनी भारत की किस्मत,
भारती-तार-ताने-भरनी में मैं रत,

तुम देश-पिता, मैं देश-पुत्र—सच्चा ही,

व्यापार साम्य से यह कहने की हिम्मत—

तुममें-मुझमें

कुछ और निकट का

नाता!

१०८

कुछ नहीं हमारे शब्द, छंद में, रागों में,
हे बापू, जो हो योग्य तुम्हारे चरणों के,
पर कंठों को कैसे हम रूँधे रखें ; जब
करते अंतर

उद्वेलित आहों

के भोंके ।

जिस क्षण से तुम मानवता पर वलिदान हुए,
भावों का और विचारों का बाना-ताना
फँलने लगा दिन-रात हमारे मानस पर,
तैयार हुआ

जिससे यह वाणी

का बाना ।

यह वाणी की खादी ही कट-छँटकर आई
इन पद्यों के निर्गम प्रसूनों, कलियों में,
बापू, जो अर्पित होतीं तुमको दिशि-दिशि से
लो मिला इन्हें

भी उन शत

श्रद्धांजलियों में ।

